कबीर

प्रभाकर माचवे

M
811.21
K 112 M
भारतीय
साहित्यक

MT
811.21
K112M

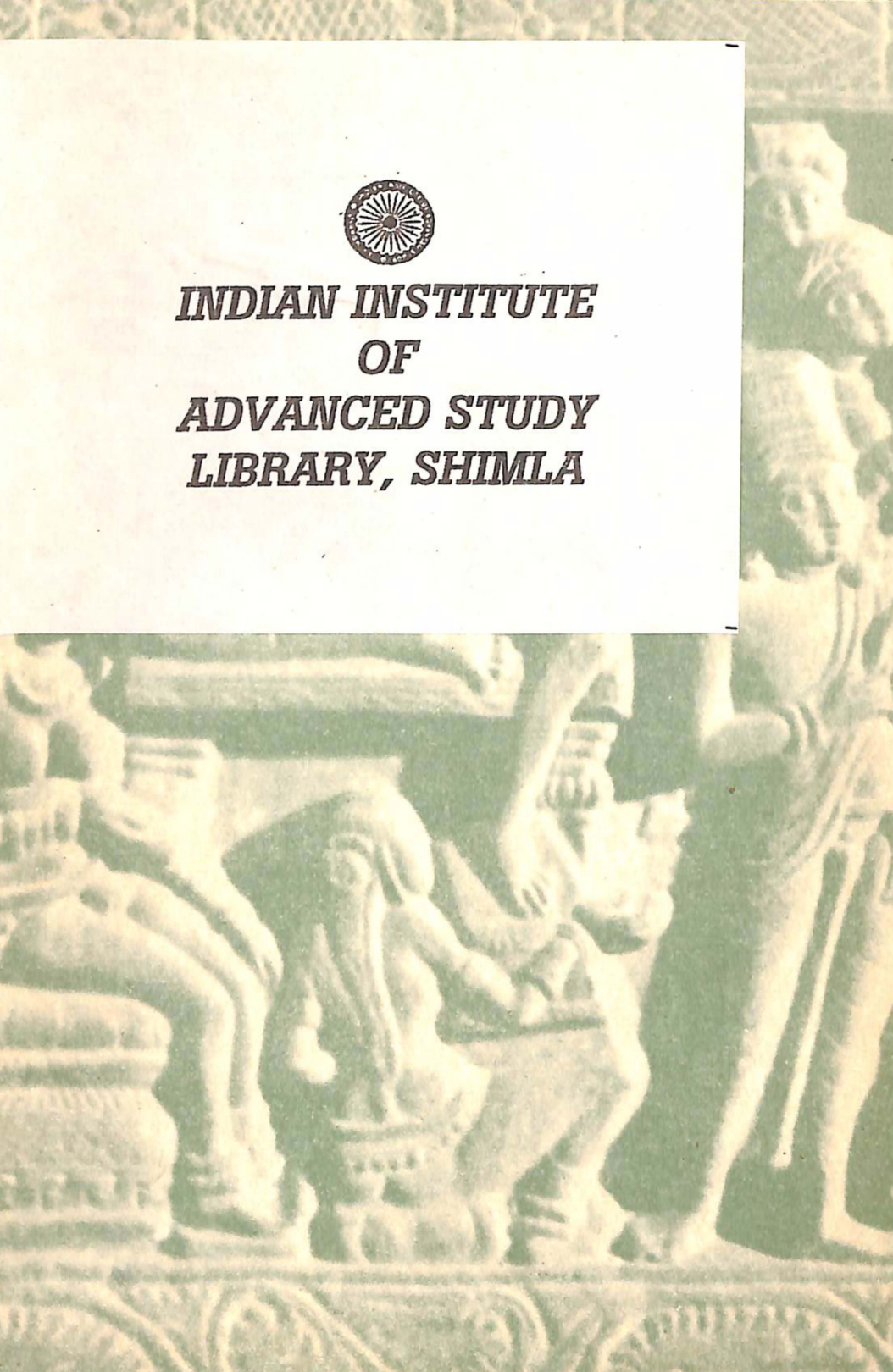

INDIAN INSTITUTE
OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY, SHIMLA

अस्तर तथा मूर्तिकलाक जे ई प्रतिरूप प्रस्तुत कएल गेल अछि, एहिमे देखाओल दृश्यमे तीन ज्योतिषी राजा शुद्धोदनकेँ महात्मा बुद्धक माए—महारानी मायाक स्वप्न व्याख्या कएकेँ कहि रहल छथि । हुनक नीचा एक मुंशी बैसल छथि, जे व्याख्या लिखैत जाए रहल छथि । प्रायः आदि कालक भारतीय चित्रकलाक चित्रक रूपमे प्राप्त इएह रेकार्ड अछि ।

नागार्जुनकोण्डा : दूसरी सदी ई.
सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली

भारतीय साहित्यक निर्माता

कबीर

लेखक

प्रभाकर माचवे

अनुवादक

छत्रानन्द सिंह झा

साहित्य अकादेमी

Kabir : Maithili translation by Chhatranand Singh Jha of Prabhakar Machwe's monograph in English. Sahitya Akademi, New Delhi (1992),

SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15.00

Library IIAS, Shimla
MT 811.21 K 112 M
00117157

© साहित्य अकादेमी
प्रथम संस्करण : 1992

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय
रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नयी दिल्ली 110 001
विक्रय विभाग : 'स्वाति', मन्दिर मार्ग, नयी दिल्ली 110 001

क्षेत्रीय कार्यालय
जीवनतारा बिल्डिंग, चौथी मंज़िल, 23 ए /44 एक्स.,
डायमंड हार्बर रोड, कलकत्ता 700 053
304-305, अन्ना सलाई, तेनामपेट, मद्रास 600 018
172, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग,
दादर, बम्बई 400 014
109, जे. सी. मार्ग, बंगलौर 560 002

MT
811.21
K112M

SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15.00

Indian Institute of Advanced Study
117157
10.12.04
SHIMLA

ISBN 81-7201-185-7

लेजर सैटिंग : वैलविश पब्लिशर्स,
पीतमपुरा, दिल्ली 110 034

प्रिंटर्स : संजय प्रिंटर्स, मानसरोवर पार्क, शाहदरा, दिल्ली-110 032

क्रम

आमुख	7
जीवनी	10
दर्शन	26
कविता	44
भाषा	46
छंद	51
किछु हिन्दी-अग्रेंजी पुस्तक	63
कबीरक रचना	65

आमुख

हमर मित्र डा. प्रभाकर माचवे एहि छोट-सन पुस्तकमे पन्द्रहम शताब्दीक महान धार्मिक संत कबीरक बहुत उत्तम निरूपण कएलनि अछि । ओहि समय हिन्दू आ इस्लाम एहि दू महान् धर्ममे संघर्ष छल । दूनू धर्मक अर्थहीन रूढ़ि आओर धर्मकाण्डक आलोचना आओर ओहि पर प्रहार कए, कबीर दूनू धर्मकेँ निकट अनबाक यत्न कएलनि । ओ, दूनू धर्मक अन्तिम ध्येय एक आओर समान छल, से प्रचारित कएलनि । ओ कट्टर रामभक्त छलाह । हुनका अनुसार ओ ने तँ विष्णुक अवतार छलाह आओर ने व्यक्ति-सत्ता । ओ निर्गुण निराकार छलाह । हुनक "राम" मुस्लिमक "रहीम" सँ कोनो प्रकारसँ भिन्न नहि छलाह । हुनक व्यावहारिक उपदेश कठोर नैतिक आचरणक पालन पर जोर दैत अछि आओर ओ अंधविश्वास विरोधी अछि । रामक प्रति प्रेम आ समर्पणक भावना मे हुनक भाषा मधुर आओर गंभीर अछि; परन्तु सामाजिक सुधारक क्षेत्र में ओ बहुत कठोर आओर उत्तेजनापूर्ण अछि । नानक आओर दोसर सिख गुरू लोकनिक मनमे कबीरक प्रति बड़ आदर छल । ओ हिन्दू लोकनिक जाति-भेदक तीव्र निन्दा कएलनि । मूर्ति-पूजा, अवतारवाद, तीर्थ-यात्रा एवं पुण्यार्जन हेतु नदीमे स्नान आ एही प्रकारक विधिसँ परलोकमे आनन्द पएबाक धारणाक विरोधमे कबीर कठोर भाषाक प्रयोग कएलनि अछि । एवं प्रकारेँ, ओ मुसलमान लोकनिक मस्जिद सँ सटल रहबाक अभ्यास तथा सुन्नत, अजान, नमाज, रोजा आदिक बेस दुर्गति कयलनि अछि ।

कबीरक कविताकेँ महान बनबैत अछि हुनक व्यक्तिगत आध्यात्मिक अनुभव-गाम्भीर्य एवं वैचारिक दिव्यता, जकरा ओ अत्यन्त सरल भाषा मे सहज ढंग सँ व्यक्त करैत छथि । अर्धशून्य रूढ़िक निषेध करैत घोर प्रहार परिलक्षित होइत अछि, परन्तु ओहिमे

कटुता कतहु नहि उद्‌भासित होइछ । ओ तँ जखन परम तत्वक दिव्य प्रेमक मस्तीमे होइत छथि तखन हुनक सर्वश्रेष्ठ कविता प्रस्फुटित होइत अछि—

"सुनू, हमर बंधु,
वैह जनैत अछि, जे प्रेम करैत अछि ।
प्रियक प्रति जँ अहाँमे प्रेमक लगन नहि अछि
तं व्यर्थ अछि एहि शरीरकेँ सजायब
आ आंखिमे अंजन लगायब ।"

कबीर कहैत छथि—

बिरह भुजंगम तन बसै, मंत्र न लागे कोइ ।
राम वियोगी ना जिबै, जीबै तो बौरा होइ ।।

प्रियतमक प्रति एहन प्रगाढ़ प्रेम-भावना सूफी लोकनिक "इश्के हकीकी" क समान अछि ।

कबीर नाथपंथी योगी लोकनिसँ रूढ़ीवादी कर्मकांड आओर अंधविश्वास घोर अवहेलनाक परम्परा ग्रहण कयलनि परन्तु ओ योगी लोकनिकेँ सेहो नहि छोड़लनि । हुनक मत छल जे ई योगी लोकनि सेहो हठयौगिक आचार पर अनावश्यक बल दए रहल छथि आओर भक्ति अथवा दिव्य प्रेमक उपेक्षा कए रहल छथि । ओ तँ परमात्माक संग सहज मिलन, अथवा "सहज समाधि" पर जोर दैत छथि । अपन "विनती के अंग" मे लिखैत छथि :

ने हम अपन आंखि मूनैत छी, आने अपन काने बंद करै छी,
हम अपन कायाकेँ दण्डित नहि करैत छी,
हम अपन खुजल आंखिसँ देखैत आओर मुस्कियाइत छी,
हुनक सुन्दरता सब दिस देखैत छी ।

अपन अहंक सम्पूर्ण विलय एहि दिव्य-प्रेमक भावनाक एक प्रथम अनिवार्यता अछि । ओ कहैत छथि—

'ई मौसीक घर नहि थिक जतए नोर बहौलासँ
सब किछु भेटि जाएत ।

एहि ठाम वैह प्रवेश पाबि सकैत छथि
जे अपन सिरकटा सकथि ।'

ई. अण्डरहिलक कथनानुसार, "कबीरक दिव्य अनुभवक धारणा मूलतः कर्मप्रधान अछि । गति आओर वेगक प्रतीक आ संकेतसँ बहुधा हमरा लोकनि धरि ओ अपन बात पहुंचबैत छथि, जेना "नाचब" आ प्रेमक बंधनसँ अखिल विश्वक चिरंतन झूला झूलब" आदिक अद्‌भुत एवं आधुनिक बिम्ब-चित्र कबीरमे उपलब्ध होइत अछि ।

मध्य युगक जीवन आओर साहित्यपर कबीरक विराट प्रभाव पड़ल अछि । हिन्दीमे हुनक व्यक्तित्वक तुलना भक्तिक दोसर सगुण शाखाक महान् भक्तकवि तुलसी दासेसँ कएल जाए सकैत अछि ।

डॉ. माचबे द्वारा लिखित एहि पुस्तकमे संत कवि कबीरक धार्मिक सौहार्द्र, भातृत्व-प्रचार, सामाजिक सुधार आ गहन साहित्यिक योगदानक बहुत उत्तम परिचय देल गेल अछि । एहि पुस्तिकाक निःसंदेह विश्व-धर्म आओर श्रेष्ठ साहित्य-प्रेमी लोकनि द्वारा स्वागत कएल जाएत ।

—हजारी प्रसाद द्विवेदी
(भारतीय साहित्यक टैगोर प्रोफेसर)

पंजाब युनिवर्सिटी,
चण्डीगढ़-14
20 अक्टूबर 1967

जीवनी

कबीरक जीवनक विषयमे ऐतिहासिक तथ्यक संदर्भमे एकरूपता नहि रहबाक कारणें इतिहासकार, साहित्यिक विद्वान आओर कबीर पंथी अनुयायी लोकिनमे सेहो मतैक्य नहिअछि । कबीरक रचनामे अन्तः साक्ष्य बहुत कम उपलब्ध अछि । तथापि, एक सामान्य जीवन चरित्रक रूपरेखा बनयबाक प्रयास, जे कोनो स्रोत उपलब्ध भए सकल तकरे आधारपर, एतेक धरि जे जनश्रुतिक आधार पर सेहो, एहिठाम प्रस्तुत कएल जा रहल अछि ।

कबीक एक पदक एक पंक्ति मे जयदेव आओर नामदेवक नामक गुरूक रूपमे अपरोक्ष रूपसँ उल्लेख कएल गेल अछि । जयदेव बारहम शताब्दीमे भेलाह आ नामदेव तेरहम शताब्दीमे । 1596 में लिखल गेल "आईन-ए-अकबरी" मे कबीरक नामक उल्लेख एहि प्रकारसँ अछि जे आब जे-जे महान पवित्र आत्मा नहि रहलाह, ओहिमे एक कबीर सेहो छलाह । दोसर दिशि मौलवी गुलाम सरवर अपन "खजीनात-उल-आसफिया" मे कबीरक जन्म वर्ष 1594 कहैत छथि, जे असत्य अछि । कबीर-पंथीक प्रसिद्ध ग्रंथ "कबीर-चरित बोध" मे हुनक जन्मवर्ष 1398 कहल गेल अछि । ईहो वर्ष ठीक नहि बुझि पड़ैत अछि । जे बात पूर्ण विश्वासक संग कहल जा सकैत अछि, से मात्र एतबे अछि जे कबीर भरिसक ईसाक पंद्रहम शताब्दीमे विद्यमान छलाह । ई बात एहि सामान्य जनश्रुति सँ मिलैत अछि जे कबीर सिकन्दर लोदीक समकालीन छलाह, आओर प्रायः हुनकासँ भेंटो कएने छलाह । ब्रिग्सक अनुसार, सिकन्दर लोदीक आगमन काशी मे 1494 मे भेल छल । भारतक पुरातत्व विभाग कहैत अछि जे बिजली खाँ आमी नदीक कछेरिमे 1495 मे कबीर शाहक मकबरा बनबौलनि । डॉ. रामकुमार वर्माक मत अछि जे बिजली खाँ कबीरक मकबरा नहि, हुनक स्मृतिमे एक महल बनबौलनि । पुरातत्व विभागक

सर्वेक्षणमे देल गेल तिथि अनुमानित अछि ।

कबीर सामान्यतः रामानन्दक शिष्य मानल जाइत छथि, यद्यपि डॉ. भंडारकर आओर मोहन सिंह एहि बातकेँ स्वीकार नहि करैत छथि । ग्रियर्सन रामानन्दक जन्मवर्ष 1298 देने छथि । फर्कुहर आ केई तिथि 1400 सँ 1470 क बीच मानैत छथि । डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत, सम्पूर्ण उपलब्ध सामग्रीक अनुवीक्षण-अवगाहन कएलाक बाद एहि निष्कर्षपर पहुँचलाह अछि जे कबीरक जन्म 1398[1] ई. मे भेल । एहि प्रकारक परस्पर विरोधी मतक अवलोकनक बाद ई लगैत अछि जे एहि विषयमे कोनो बद्धमूल पूर्वाग्रह राखब कतेक अनुचित अछि ।

एकटा काजी कुरान शरीफ खोलि जे पहिल शब्द तकलनि वैह "कबीरक" नाम बनि गेल । अरबी मे कबीर शब्दक अर्थ होइछ महान । कबीर अपन एक गोट दोहामे कहने छथि—

कबिरा तू ही कबीरू तू तोरे नाम कबीर ।
रामरतन तब पाइये जद पहिले तज शरीर ।।
—कबीर ग्रंथावली (श्याम सुन्दर दास, पृष्ठ 262)

कबीरक जन्म-स्थानक संबंधमे सेहो तीन मत अछि—मगहर, काशी आओर आजमगढ़क बेलहरा गाम । मगहरक पक्षमे ई तर्क अछि जे कबीर अपन रचनामे ओकर उल्लेख कएने छथि । ओ लिखैत छथि जे काशी देखबासँ पूर्व ओ मगहर देखलनि आ मरबासँ पूर्व ओ पुनः मगहर अएलाह । मगहर, काशी (आइ काल्हिक वाराणसी) क निकट अछि आ ओहिठाम कबीरक मकबरा अछि जकर उल्लेख पूर्वमे भए चुकल अछि ।

ई सत्य अछि जे कबीर अपन सम्पूर्ण जीवन मुख्यतः काशीक जोलहाक समान बितौलनि, जेना कि ओ स्वयं वर्णन करैत छथि । अन्य कतेको कबीरपंथी ग्रंथ सेहो एही जनविश्वासकेँ स्वीकारैत

---

1. कबीर की विचारधारा (द्वितीय संस्करण) पृष्ठ 24

अछि । परन्तु और कोनो प्रमाण नहि जे हुनक जन्म काशीमे भेलनि । "बनारस गजट" मे ई उल्लेख अछि जे कबीर क जन्म वेलहर गाम मे भेल छल । भरिसक जनश्रुतिक इएह कारण अछि जे ओ लहरतारामे उत्पन्न भेलाह । परन्तु एहि बातक पक्षमे सेहो कोनो पुष्ट प्रमाण उपलब्ध नहि होइछ । आजमगढ़ जिलामे कबीर, हुनक पंथ अथवा अनुयायीक कोनो स्मारक नहि अछि ।

कवीरक माता-पिता आ जातिक विषयमे सेहो कतोक मत अछि । ओ दैवी प्रकाशसँ उत्पन्न भेलाह अथवा लहरताराक पोखरिमे एक पूर्णपुष्पित कमलपर पाओल गेलाह एहि सब चमत्कारपूर्ण जनश्रुतिकेँ छोड़ियो देलापर दू संभाव्य कथा सेहो अछिः ओ एक ब्राह्मणी विधवा (पिता अज्ञात) क संतान छलाह जकरा ओ (ब्राह्मणी) छोड़ि देने छल आओर एक जोलहा दम्पत्ति नीरू आ नीमा ओकरा (बालककेँ) उठा लेलक; अथवा ई जे ओ एही मुस्लिम दम्पतिक संतान छलाह । हुनकर कवितामे मात्र एतबे उल्लेख भेटैत अछि जे जखन ओ छोट छलाह, तखने हुनकर माता-पिता मरि गेलथिन ।

हुनकर जातिक विषयमे तीन प्रकारक तर्क अछि । अपन रचनामे ओ अपनाकेँ "जोलाहा" आओर "कोरी" कहैत छथि । वाराणसीक अधिसंख्य जोलहा मुसलमान अछि । उत्तर-प्रदेशमे "कोरी" सेहो एक प्रकारक वयन-जीबी छथि, मुदा ओ निम्न जातिक बुझल जाइत छथि । डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदीक अनुसार कबीर 'जुगी' अथवा 'जोगी' (कबीर अपन पिताकेँ गोंसाई कहैत छथि) जातिक छलाह । ओ वयन-जीबी छलाह आओर ओ इस्लाम धर्म स्वीकार कए लेने छलाह । नाथपंथी कहौनिहार जाति बंधनहीन ओ घुमन्तू वैरागी साधुलोकनिक अनुयायी छलाह । भारतमे मुसलमानी राज्यक स्थापनाक बाद ओहिमे सँ बहुतो इस्लाम धर्म अपना लेलनि, मुदा हुनका लोकनिक पुरना आचार-विचार ओहिना रहलनि । एहि स्थापनाक समर्थनमे डॉ. द्विवेदी निम्न तर्क देलनि अछि; कबीर स्वयं कैं "जोलहा" कहैत छथि, मुदा कखनो मुसलमान नहि कहैत छथि । जाहि कोनो ठाम ओ अपनाकें "ना हिन्दू ना मुस्लिम" कहैत छथि, तखन ओ चातुर्वर्ण्यक नीचाक जातिक उल्लेख करैत छथि ।

अपन एक पदमे कबीर कहैत छथि जे जोगी, हिन्दू आओर मुसलमान, एक-दोसरासँ एकदम भिन्न जाति-समूह छथि—

जोगी गोरख गोरख करई, हिन्दू राम-नाम उच्चरई ।
मुसलमान कहे एक खुदाई,
कबिरा को स्वामी घट-घट रहयो समाई ।।
—कबीर ग्रंथावली, पृष्ठ सं. 200

(योगी गोरख-गोरख जपैत अछि, हिन्दू राम-नामक उच्चारण करैत अछि, मुसलमान एक खुदा (ईश्वर) मानैत अछि; मुदा कबीरक प्रभु सभ मे बिराजमान छथि ।)

ई जनश्रुति अछि जे कबीरक चोला त्यागलाक बाद हुनक शिष्य. हिन्दू आ मुस्लिम अनुयायी अंतिम संस्कारक लेल लड़ए लगलाह । हिन्दू चाहैत छलाह जे दाह-संस्कार हो, मुस्लिम चाहैत छलाह जे दफन-विधि हो (कथा एहिना अछि जे चादर उठाओल गेला पर सब देखलनि जे ओकरा तर शव नहि अछि, अपितु फूलक ढ़ेरी अछि जकरा दूनू दल अपनामे बांटि लेलक) —आओर एकटा ईहो जे हुनका दू गुरू छलथिन—रामानन्द आओर शेख तकी । ई सब बात सिद्ध करैत अछि जे कबीर कोनो बन्हल-बन्हाएल धार्मिक विश्वासक जड़तामे उत्पन्न नहि भेलाह, ने बढ़लाह । ओ दूनू धर्मक कट्टरताक आलोचक रहथि आओर एक विश्वात्माक परम तत्वक, सब सीमासँ अलग आओर उपर उठि कए होएबाक बात जे करैत छथि— (हद-अनहदक दोनो गया, कबिरा देखा नूर) तँ ताहि लेल कोनो आधार छल, जे ओ "निगुरे" बनलाह ।

हुनक शिक्षा आओर गुरूपरम्पराक विषयमे सेहो कतेको अनुमान अछि । ई तँ सब मानैत छथि जे ओ कोनो शाला (पाठशाला) मे विधिवत शिक्षा नहि प्राप्त कएलनि, आने ओ भाषा, दर्शन अथवा कपड़ा बिनबाक कार्यमे कोनो व्यक्तिसँ दीक्षित भेलाह । डॉ. मोहन सिंहक मत अछि जे कबीर "गुरू" शब्द ईश्वरक लेल प्रयुक्त करैत छथि, जे कि हुनका आध्यात्मिक अथवा पारलौकिक विद्यामे शिक्षित कएनिहार कोनो आचार्य अथवा पीर नहि छलथिन । ओ एही लेल

"निगुरे" कहौलनि । विशेषकए हुनक दार्शनिक चिन्तन हुनक अन्तर्ज्ञानिक फल छल, हुनक आध्यात्मिक साधना बहुत अंशमे आत्मोपलब्धि छल । परन्तु मालकम वेस्टकॉट आओर डॉ. आर. एस. त्रिपाठी मानैत छथि जे कबीरक शिक्षक शेख तकी छलाह । गुलाम सरवरक "खजीनात-उल-आसफिया" मे इएह कहल गेल अछि । कबीरक पद आओर अन्य रचनामे कोनो प्रत्यक्ष सूफी संबंध देखि नहि पड़ैत अछि, तथापि ई स्पष्ट अछि जे हुनकापर सूफी संतक प्रगाढ़ प्रभाव अछि । रामानन्दक संग हुनक संबंधक विषयमे इएह कहल जाइत अछि । यद्यपि कबीर इएह कहैत छथि जे हमर गुरू बनारसमे छथि; ओ प्रत्यक्षरूपसँ रामानन्दक नाम नहि लैत छथि, परन्तु रामानन्द आओर कबीरमे बहुत घनिष्ठ संबंध रहल होएनि, जेना कि हुनक बानी आओर उपदेशक समानतासँ पता चलैत अछि । "दाबिस्तान-ए-तवारीख" क लेखक मोहसान फानी आ "भक्त माल" क रचयिता नामदास आओर ओकर टीकाकार प्रियदासक अनुसार स्वामी रामानन्द कबीरक गुरू छलाह ।

कबीरक पारिवारिक जीवन बहुत सुखमय नहि रहल होएतनि । ओ एक अविश्रांत साधक छलाह, परन्तु ओ लौकिक बंधनकेँ पूर्ण रूपसँ त्यागल नहि । हुनका पत्नी आ संतान छलनि । हुनका लोकनिक भरण-पोषणक लेल ओ श्रम सेहो करैत छलाह । कतोक अनुश्रुतिक अनुसार लोई हुनकर पत्नी रहथिन, जनिक माता-पिताक कोनो अता-पिता नहि भेटैत अछि । हुनक विवाह कोना आ कतए भेलनि, ईहो रहस्ये बनल अछि । डॉ. राम कुमार वर्मा कबीरक लेखनक अन्तः साक्ष्य सँ ई खोज कएलनि अछि जे कबीरकेँ दू स्त्री छलथिन; एक साधारण, दोसर रूपवती । दोसर स्त्री धनिया अथवा रामजनिया छलथिन । "रामजनिया" शब्द जें कि नचनिहारिक लेल प्रयुक्त होइत अछि, डॉ. रामकुमार वर्माक संकेत अछि जे भरिसक दोसर नर्तकी छलीह । कबीरपंथी एहन कोनो "खोज" कैँ एकदम स्वीकार नहि करैत छथि; अपितु एकर विरोधे करैत छथि ।

परन्तु ई सब क्यो स्वीकार करैत छथि जे कबीरकेँ कमाल नामक एक पुत्र आ कमाली नामक एक बेटी छलनि । ईहो कहल जाइत

अछि जे पुत्र कमाल आओर पत्नी लोई कैँ कबीरक पारलौकिक साधनाक विचार पसिन्न नहि छल । से कबीरक रचनासँ स्पष्ट होइत अछि । ओ अपन पत्नीक लेल कतेको कटु शब्द लिखैत छथि "कुरूपी, कुजाति, कुलुक्खनी" आदि । आओर पत्नी सेहो शिकाइत करैत छथिन जे जखन हुनका स्वयं भूखल रहए पड़ैत छनि, कबीर अपना ओहिठाम किएक एतेक साधु आओर अतिथि कैँ खुअएबाक लेल आनि लैत छथि ?

कबीर वंश परम्परासँ जोलहा छलाह; परन्तु बुनकरक कार्यमे अथवा व्यवसायमे हुनका मन एकदम नहि लगैत छलनि । ओ अपन कवितामे अपन व्यवसायक कतेको शब्द रूपक, उत्प्रेक्षाक रूपमे प्रयुक्त करैत छथि; जेना-चरखा सांचा, ताना-बाना, चदरिया, बांस की मछली । तथापि ओ एहि बीनल जाय बला कार्यसँ बेसी अपन दार्शनिक चिन्तन-मनन ब्रह्म-जालमे ओझराएल छलाह । अपन ग्राहकसँ अधिक हुनकर ध्यान ईश्वरमे लीन रहैत छल—

तनना बुनना सभु तज्यो है कबीर ।
हरि का नाम लिखि लियौ सरीर ।।

—कबीर वाङमय (सं. डॉ. जयदेव सिंह, डॉ. वासुदेव सिंह, पृष्ठ 139)

(कबीर कताइ-बुनाइक कार्य छोड़ि देलनि सम्पूर्ण शरीरमे हरि (ईश्वर) क नाम मुद्रित भए गेल छनि ।)

कबीर बहुतो स्थान पर प्रवास आओर यात्रा कएने होएताह । अपन एक भजनमे ओ कहैत छथि—"हम कतोक बेर मक्का आओर हज पर गेल छी ।" मुदा ई निश्चयपूर्वक नहि कहल जा सकैत अछि जे हुनक ई उक्ति तथ्यपर आधारित छल, अथवा अपन बिरोधीकैँ चुप करबाक लेल हुनक ई काव्यमय प्रतीकात्मक सदूक्ति अथवा अतिशयोक्ति मात्र छल । भारतमे ओ अवश्य तीर्थ सभक भ्रमण कए चुकल छलाह, ई हुनक बानीसँ पता लगैत अछि । आचार्य क्षितिमोहन सेन कबीरक गुजरात यात्राक उल्लेख कएलनि अछि । 'खुलासातुन तवारीख' मे हुनक रतनपुर यात्राक चर्चा अछि । "आदि ग्रंथ" मे

गोमतीक कछेरिक हुनक यात्राक वर्णन एक पदमे अबैत अछि जाहिमे एक एहन धर्मनिष्ठ मुसलमानक उल्लेख अछि, जकरा ओ "पीताम्बर पीर" कहैत छथिन-

हज हमरी गोमती तीर, जहाँ बसै पीताम्बर पीर ।।"

—कबीर ग्रंथावली (श्यामसुन्दर दास, पृष्ठ 330)

(हमर हज गोमती तीर अछि, जतए पीताम्बर (पीयर वस्त्र धारी) पीर बास करैत छथि ।)

"आइन-ए-अकबरी" मे लिखल अछि जे कबीर जगन्नाथपुरी गेल छलाह । आओर "मराठीवासीक इतिहास" ग्रंथमे हुनक दक्षिण महाराष्ट्रमे पंढरपुर धरि जएबाक वर्णन अछि । कबीरपंथी मे लोकप्रिय "कबीर मंसूर" ग्रंथमे कबीरक बगदाद, समरकंद आ बुखाराक यात्राक विवरण अछि । जँ कि ई ऐतिहासिक स्थान प्रसिद्ध पारसी सूफी लोकनिसँ संबद्ध छल, तैं उचित मानल गेल जे कबीर सेहो ओतए गेल होथि ।

कबीरकेँ अपन जीवन-कालमे कोनो सम्मान नहि प्राप्त भेलनि । तथाकथित निम्न ओ ओछ जातिमे उत्पन्न होएबाक कारणेँ कबीरक उपेक्षे कएल गेल आओर एहि बातक लेल हुनक उपहासें कएल गेलनि जे ओ उपदेशक बनि गेल छथि । हुनका शारीरिक दण्ड सेहो देल गेलनि । किछु व्यक्ति हुनका जंजीर ओ बेड़ीसँ जकड़लक, किछु लोक हुनका दूनू हाथकेँ पीठक पाछू बान्हि कए पिटलक । से हुनक अनेक पदसं ज्ञात होइछ । अनन्त दासक "पारचै" मे एकर उल्लेख अछि आओर संगहिं, एक जनश्रुति ईहो अछि जे सिकन्दर लोदी हुनका पर अत्याचार कएलक । जी. एच. वेस्टकॉट अपन "कबीर एण्ड द कबीर पंथ" ग्रंथमे हिन्दू आओर मुसलमान दूनूक द्वारा हुनक (कबीर) उत्पीड़नक उल्लेख एहि शब्दमे कएने छथिः—

"कबीरक सत्यवादिता तथा सामाजिक रूढ़िक प्रति हुनक सामाजिक अनादरक फलस्वरूप चारू कात हुनक अनेक शत्रु ठाढ़ भए गेल । कबीरपंथी मान्यताक अनुसार, ओ शेख तकीये छलाह, जे मुसलमानक भावनाकेँ स्वर देलनि । ई प्रसिद्ध पीर बादशाह सिकन्दर लोदी लग पहुँचल आओर ओ कबीर पर ई आरोप लगौलक

जे ओ (कबीर) अपनाकेँ दैवी गुणसँ सम्पन्न कहैत अछि । ओ एहन अपराध कएनिहारकेँ मृत्यु-दण्ड देल जएबाक विधान सुझौलक । बादशाह फरमान (आदेश-पत्र) निकालल आ कबीरकेँ पकड़ि दरबारमे अनबाक लेल सिपाही पठौलक । कबीरकेँ पकड़ि कए लए गेनिहार लोक कोनहुंना हुनका बुझा-सुझा कए लए अनलक आओर जाहिमे संध्या भए गेलैक । कबीर बिना किछु बजने बादशाहक समक्ष ठाढ़ रहलाह । काजी चिचिया कए बाजल 'काफिर, तों बादशाहकेँ सलाम किएक नहि करैत छें"? कबीर शान्त भावसँ उत्तर देलथिन "जे दोसराक दुख-दर्द बुझि सकैत छथि, ओएह पीर होइत छथि । शेष सब काफिर छथि ।"[1]

बादशाह पुछल "हम तोरा सकालेमे अएबाक आदेश देने छलियह, तों संध्याकाल किएक अयलह ? कबीर कहल "हम एक दृश्य देखल, जकरा देखबामे हम अटकि गेलहुँ ।" बादशाह तमसाइत पुछल "एहन कोन दृश्य भए सकैत अछि, जे सुल्तानक आदेश उल्लंघन करबाक लेल विवश करय ?" कबीर उत्तर देल "हम सुइयाक नोकोसँ पातर छेदसँ एक कारवाँ केँ जाइत देखलहुँ ।" बादशाह कहल - "तों फुसियाह छह ?" कबीर उत्तर देल- "औ सुल्तान! स्वर्ग आ नरकक बीचमे कतेक पैघ अन्तर छैक ! सूर्य आओर चन्द्रमाक बीचमे अन्तरिक्षमे अनगिनत हाथी आ ऊंट समायल अछि आ ई सब एक आँखिक पुतलीक नोंकसँ देखल जा सकैत अछि, जे सूइयाक नोंकक छेदोसँ छोट अछि ।" ई उत्तर सुनि बादशाह बहुत प्रसन्न भेलाह आ ओ कबीरकेँ छोड़ि देलथिन ।

सनातनी ब्राह्मण कट्टरपंथी लोकनि कबीरकेँ अधार्मिक कहल आओर एक अधलाह चालिक स्त्रीक संग कबीरक मित्रताक लोकापवाद पसारल । एहि पर सुल्तान कहल जे कबीरकेँ प्राणदण्ड दए दे । कबीरकेँ जंजीर मे बान्हल गेल आओर एकटा नावपर बैसा देल गेल, जकरा पाथर सँ भरि हुनका जीबिते डुबा देबाक दण्ड छल । नाव

---

1. कबिरा सोई पीर है जो जाने पर पीर ।
   जो पर पीर न जानई सो काफिर बेपीर ।।

तँ डुबि गेल मुदा कबीर एकटा चीताक छालपर बैसल एक बच्चाक रूपमे नदीसँ हेलैत ऊपर आबि गेलाह । कबीरकेँ पुनः पकड़ल गेल आ हुनका जीविते जरयबाक प्रयास कएल गेल एहू मे असफलते भेटल । आब हुनकापर ई आरोप लगाओल गेलनि जे ओ जादूगर छथि आओर हुनका पिशाच-सिद्धि प्राप्त छनि । तें हुनका मत्त हाथीक पयर तर थकुचल-पीचल जएबाक दण्ड देल गेलनि । आब हाथी आओर कबीरक बीच एक सिंह प्रकट भेल, जकरा देखिते हाथी भागि गेल । कबीर क संबंधमे एहन अनेको किंवदन्ती अछि आओर ओहिमे सँ किछु हुनक शिष्य ओ अनुयायी लोकनि द्वारा लिखल पुस्तकमे स्थान पाबि गेल ।

कबीरक मृत्युवर्षक विषयमे चारि भिन्न-भिन्न मत अछिः-किछु ओकरा 1447 कहैत छथिः किछु गोटे 1511; किछु गोटे 1517 । अनन्त दासक मत अछि जे कबीर 120 वर्षक दीर्घ आयु धरि जीबित रहलाह । धर्म दास कबीरक पद आओर साखी सभक संग्रह हुनक जीवन कालेमे आरंभ कए देने रहथि । हुनक पहिल पूर्ण संग्रह 1463 क अछि ।बाबू श्याम सुन्दर दास मानैत छथि जे कबीरक निधन 1517 मे भेल । सर डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर अपन "इण्डियन एम्पायर" ग्रंथ (1892) मे कबीरक जीवन-काल 1380 सँ 1420 कहैत छथि । डॉ. हर प्रसाद शास्त्रीक अनुसार कबीरक जीवन-काल 1398 सं 1518 अछि ।

ई एक लोकोत्तर जीवनक सहज रूपरेखा अछि जकर अनुसार जन-श्रुतिक अंबार जुटि गेल । ई रूपरेखा निस्संदेह अस्पष्ट आओर अपूर्ण अछि । विशेष रूपसँ जखन हम ई विचार करैत छी जे कबीरक कविता आओर दर्शन कतोक शताब्दी धरि मात्र हिन्दी साहित्ये पर नहि, उत्तर भारतक साधारण जन-जीवन अथवा जन-सामान्यक जीवन पर प्रगाढ़ प्रभाव पहुँचौलक अछि । आरंभिक हिन्दी साहित्यक सबसँ पैघ पद रचयिता आओर रहस्यवादी कवि कबीरे छलाह; एहिमे कोनो संदेह नहि । विशप वैस्टकॉटक 1907 मे छपल कबीर पर अंग्रेजी पुस्तकक पहिल संस्करण मे प्रकाशकीय टिप्पणी छल "कबीर पन्द्रहम शताब्दीक भारतीय "लूथर" (धर्मसुधारक) छलाह जे हिन्दीमे

आध्यात्मिक साहित्य आओर पवित्र वानीक रचना कएलनि । ओ आओर हुनक अनुयायी इस्लामक कट्टर एकेश्वरवाद आओर मूर्ति-पूजाक खण्डनक संग हिन्दुत्वमे जे सर्वोत्तम आओर पारम्परिक स्रोत छल, ओकर समन्वय कएलनि । हिन्दुत्व आओर इस्लामक नीक-नीक तत्वकेँ मिला कए-जेना राजा राममोहन राय आगां कएलनि, कबीर एक 'मुश्तरका फलसफा" एक समन्वित धर्मपंथ बनएबाक प्रयास कएलनि । उपनिषदक अद्वैतवाद पर ओ अपन उपदेशक आधार रखलनि । ओ पैध गायक छलाह, अवधूत छलाह, अद्वैतवादी छलाह ।"

कबीरक बहुतो व्यक्ति-चित्र उपलब्ध होइत अछि, मुदा ओहिमे सँ कोनोटा समकालीन नहि अछि । ई एक विचित्र बात अछि जे भारतमे कोनोटा महाकवि अथवा श्रेष्ठ प्राचीन साहित्यकारक, खाहे प्राचीन होथि अथवा मध्य युगीन, कोनोटा प्रामाणिक चित्र अथवा शिल्प, ऐतिहासिक साक्ष्यक रूपमे, खाहे ओ कालिदास होथि, ज्ञानेश्वर होथि, तिरूवल्लुवर होथि कोनो व्यक्तिक कोनो अधिकारिक चित्र नहि भेटैत अछि । एहि लेल कबीरक जतेक-जतेक चित्र प्राप्त अछि. ओहिमे सबसँ पुरान चित्र ब्रिटिश म्यूजियममे सुरक्षित अछि, जकर एक अनुकृति कलकत्ताक इण्डियन म्यूजियममे उपलब्ध अछि । एहि चित्रमे संत कवि अपन चरखा पर उघार देह बैसल छथि, हुनक दूनू कात दू शिष्य छथिन । एकक गरामे हार छैक, दोसर मुसलमान जानि पड़ैत अछि, जकर हाथमे एक वाद्य अछि । एहि चित्रमे कबीरकेँ दाढ़ी नहि छनि । गुरू अर्जुनदेव गुरूद्वारा मे एक प्राचीन चित्र अछि, जाहिमे कबीर चरखापर बैसल छथि आओर दाढ़ी सेहो छनि । कबीर चौरा, बनारसमे लागल आओर "रामानन्दते रामतीर्थ" तथा "कबीर वचनाबलीग्रंथ" मे छपल चित्र मे हुनका सूफी संत देखाओल गेल अछि । हुनक हाथ मे एक जप-माला छनि, आओर हुनकर माथ पर एक फकीरी तिकोनी टोपी अछि । हुनक कानमे छेद अछि आओर ओहिमे नाथपंथी जोगीक समान गोल कुण्डल लटकल अछि । चित्रशाला प्रेस, पुणे सँ प्रकाशित चित्र बहुत बादक अछि आओर ओहिमे ओ हिन्दू साधु सदृश्य देखाओल गेल छथि ।

कबीर यथार्थमे केहन छलाह, हुनक रूप आओर भेष-भूषा केहन छल, एकर अनुमान एतेक रास चित्र आओर "शबीहा" सँ नहि लगाओल जाए सकैत अछि । भरिसक उचित इएह छल जे निर्गुण-निराकार परमेश्वरकेँ माननिहार कबीर स्वंय निराकार रहि गेलाह "बिना रूप के केवल एक नाम बनल रहलाह ।

एहिठाम संक्षेपमे, ओहि स्रोतक सेहो उल्लेख कए देब उचित होएत, जाहिसँ कबीरक जीवन संबन्धी सामग्री उपलब्ध भए सकैत अछि । नाभादास (सं. 1642) क "भक्तमाल" मे सबसँ पहिल उल्लेख भेटैत अछि । एहन मानल जाइत अछि जे ओ 1550 ई. क आसपास लिखल गेल । "भक्तमाल" मे कतोक संतक जीवन आओर चमत्कारक कथा सभ अछि । ओहिमे जे पंद भेटैत अछि, ओहिसँ मात्र एतबे पता चलैत अछि जे ओ रामानन्दक शिष्य छलाह । प्रियदासक टीकामे एही बातक पुष्टि अछि आओर जोड़ल गेल अछि जे कबीर एक विधवा ब्राह्मणीक पुत्र छलाह आ हुनकर नीरू-नीमा पालन-पोषण कएलक । एही ग्रंथमे पता लगैत अछि जे कबीर सिकन्दर लोदीक समकालीन छलाह । रैदास, गरीबदास, धर्मदास, पीपा आओर तुकारामक पदमे सेहो कबीरक उल्लेख अबैत अछि । सिक्खक धर्मग्रंथ "गुरूग्रंथ साहिब" मे कबीरक रचल कतेको "सलोक" आओर "राग" अछि । गुरू नानकक बानीमें सेहो कबीरक नामोल्लेख अबैत अछि । अनन्तदासक "परचै" मे, जे प्रायः 1600 ई. मे लिखल गेल, एहि बातक पुष्टि होइत अछि जे कबीर काशीक जोलहा छलाह आओर रामानन्दक चेला छलाह । ओ बघेर राजा बीरसिंहक समकालीन छलाह आओर हुनका सिकन्दर लोदीक अत्याचारक शिकार होमए पड़ल । ओ एक संत छलाह आओर 120 वर्षधरि जीवित रहलाह ।

किछुएक फारसी आओर उर्दूक पुस्तकोमे कबीरक नाम आओर हुनक जीवनक विषयमे कथाक उल्लेख भेटैत अछि । मौलवी गुलाम सरवरक "खजीनात-उल-आसफिया" क उल्लेख पहिने कएल गेल अछि । मोहसिन फानीक "दाबिस्तान-ई-मजाहिब" आओर मौलवी नसीरूद्दीनक "तजकिरूल-फकरा" मे ई कहल गेल अछि जे कबीर

रामानन्दक शिष्य छलाह । "आईन-ए-अकवरी" मे कबीरक समाधि अथवा मकबराक विषयमे मतभेद अछि । किछु व्यक्ति ओकरा अवध जिलाक रतनपुरमे कहैत छथि, किछु पुरीमे आओर ग्रंथकार अपन राय पुरीक पक्षमे दैत छथि ।

बेस्टकॉट अपन ग्रंथ "कबीर एण्ड द कबीर पंथ" मे "कबीर" नामक एगारह उल्लेख देलनि अछि, जकर विभिन्न तिथिमे कतोक साधु-संत अपन नामक संग अथवा उपाधिक रूपमे जोड़लनि; नागौरक कबीर चिश्ती जे गुजरात मे 1854 मे मरलाह; शेख कबीर जुलाहा जनिका मुसलमान "पीर कबीर" कहैत छथि आओर हिन्दू "भगत कबीर", 1594 मे मरलाह; ख्वाजा औलिया कबीर जे बोखारा सेहो गेलाह 1229 में मरलाह सैयद कबीरूदीन हसन बलखमे 1490 मे मरलाह । शेख कबीर बजौराक रहनिहार छलाह आओर हफीमची छलाह । शेख अब्दुल कबीर अथवा बालापीर 1539 मे मरलाह; मुल्तानक शेख कबीर जे बल्ख गेलाह आ पुनः हिन्दुस्तान आपस अएलाह आओर अकबरक संग यात्रा कएलनि ओ फतहपुरमे 1585 मे मरलाह; "अमीर कबीर मीर सैयद अली हमदानी", 1379 मे कश्मीर गेलाह आओर पाँच वर्षक बाद ओतहि मरलाह; सैयद जलालुद्दीन क पिता, सैयद अहमद कबीर सैयद जलालुद्दीन 1421 मे मरलाह आओर जनिक पौत्र कबीर-उद-दीन इस्माइल छलाह; दीवानशाह कबीरक स्मृति मे हुमायूंक राज्यकालमे जौनपुरमे एक मस्जिद बनाओल गेल ।

पहिल पांच "खजीनात-उल-आसफिया" मे उल्लिखित अछि, छठम सैर-उल-अकताब"मे; सातम "मुकुखुल-उल-तबारीख" मे; आठम "अखबार-उल-इखयार" मे आओर शेष "फरिश्ता" मे ।

कबीरक बाह्य रूप आओर हुनक आविर्भावक विषयमे इतिहासकार आओर साहित्य-समालोचक लोकनिमे ओतेक मतभेद नहि; हुनक शदी आओर मतविश्वासक विषयमे सेहो बहुतो परस्पर विरोधी मत-मतान्तर अछि । तथापि अधोलिखित मत सामान्यतः अधिक स्वीकृत कहल जाए सकैत अछि ।

कबीर पर उपनिषदक अद्वैतवाद आओर इस्लामक एकेश्वरवादक

117157 10.12.04

प्रभाव छल । मुदा हुनकामे किछु विशिष्टता सेहो छल । कबीरक ईश्वर छलः

जाके मुंह माथा नहीं, नहीं रूपक रूप ।
पुहुप वास ते पातला ऐसा तत्त अनूप ।।
— कबीर ग्रंथावली (सं.माता प्रसाद गुप्त, पृ.-10)

(जे विनु माथ ओ मुँहक छथि, पुष्पक सुगन्धोसँ जे शूक्ष्म छथि ओ (प्रभु) ततबे अनमोल छथि ।)

संगहि कबीरपर वैष्णव भक्तिक प्रगाढ़ प्रभाव छल । कतेको कविता एहन अछि जे परमात्मा आओर जीवात्माक सम्बन्धमे सूफी रंगसँ रंगल अछि; कतेको पदमे तांत्रिक सिद्ध, नाथपंथीक शब्दावली कबीर मुक्त रूपसँ अपनबैत छथि आओर कतेको पदमे ओ सहजिया छथि । संग-संग ओ अपनाकेँ निपट "अज्ञानी", "गंवार" कहैत छथि, जे कतेको प्रकारक प्रभाव अपनबैत-समाहैत चल जाइत छथि । किछु पदमे कबीर एक सरलचित्त ग्रामीणक समान भक्ति रंगमे डूबल लगैत छथि । हुनक गीत लोकगीत सदृश्य गाओल जाइत अछि जेना—

(कैसे दिन कटिहें.....)
हम अपन समय कोना बिताएब
से बाट तँ कहि दिय ।
एहि कात गंगा अछि,
ओहि कात यमुना ।
दूनूक बीचमे हमरा लेल
एकटा खोपरी बना दिय ।
हम अपन उत्तरीयकेँ फाड़ि
कागज जकॉ टुकड़ी-टुकड़ी कए देब ।
अपन आकृतिकेँ जड़ि दिय
हमर हृदयमे सदाक लेल ।
कबीर कहैत छथि, सूनू साधुजन
हमर हाथ धए लिय
आ बाट देखा दिय ।)
—कबीर (हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ.-334)

कबीर रामानन्दक सगुण रामकेँ निर्गुण, वर्णनातीत, अपरिभाषेय बनाए देलनि, जेना कि गीतामे कहल गेल अछि'" यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सः ।" आओर एक पद "शब्द को खोजि लैं" मे कबीर ईश्वरकें "शब्द" मानैत छथि——

(शब्द को खोजि ले.....)
शब्दकेँ ताकू शब्दकेँ जानू ।
तों शब्द छोड़ि किछु नहि छह
शब्द आकाश, शब्द नर्क अछि,
शब्द कोषिका, शब्द अछि व्योम
शब्द वक्तव्यमे अछि, शब्द श्रवणमे अछि,
शब्द वेद थिक, शब्दे ध्वनि,
धर्मग्रन्थक असंख्य ऋचामे गबैछ शब्द,
शब्द मंत्र थिक, शब्दे औजार,
गुरू अपन शिष्यकेँ जे किछु कहैत छथि,
से थिक शब्द,
शब्द थिक सुवास, शब्दे थिक दुर्गन्ध,
शब्द अछि साकार, शब्द निराकार
शब्द थिक पुरूष, शब्दे स्त्री
शब्द दृश्य थिक, आ अदृश्य ओंकार
शब्द रचनाक प्रारंभ
कबीर कहैत छथि, तों शब्दक परीक्षण करह,
शब्द थिक रचयिता, औ बंधु ।

कबीरक आध्यात्मक कोनो "वाद" नहि । ओ हिन्दू-मुसलमान दूनूक संकीर्णता आओर कट्टरताक तीव्र निन्दा करैत छथि । ओ निर्भीक समाज-सुधारक छथि ।

लोगो ऐसे बाबरे, पाहन पूजन जाँय ।
घर की चकिया काहै न पूजै जेहि का पीसा खाँय ।।

(अत्यन्त मूर्ख अछि लोक, पाथरकेँ पूजैत अछि । एहिसँ तँ नीक थिक जाँते पूजथि, जकर पीसल चीकस सब खाइत छथि ।)

कबीरक विचारक अन्दर विरक्तिक एक तीव्र स्वर अछि । ओहीमे ई भाव सेहो निहित अछि जे ई संसार अश्रुक सरिता अछि, दुखक सागर अछि । ओ बरोबरि एहि बातक स्मरण दियबैत छथि जे अन्ततः सब किछु मृत्युक दिशि लए जाइत अछि । एही कारणें किछु समीक्षक लोकनि बौद्ध-धर्म आओर कबीरपंथमे साम्य पबैत छथि । "शून्य" सदृश्य बौद्ध दार्शनिक शब्द, कबीरमे सेहो बेरबेर अबैत अछि । हुनक किछु पंक्ति नागार्जुनक "शून्यकारिता" क अनुवादसन लगैत अछि—

भारी कहूँ तो बहु डरौं । हलका कहूं तो झूठा ।
मैं का जानो राम कूं, नैन कबहूँ न दीठा ।।
कबीर ग्रं. (श्या. सु. दास, पृ.17)

(हम हुनका भारी कहबामे डेराइत छी, हल्लुको कहब तँ असत्ये होएत । रामक विषयमे हम की कहब, जनिका अपन आँखिसँ कहियो नहि देखलहुँ ।)

ओ बेरबेर कहल आ अनकहल, स्वर आ मौनक बीचक मध्य स्थितिक उल्लेख करैत छथि । उच्च कुलीनक ढोंगक आलोचना करैत काल ओ बौद्धक उत्साह आओर वज्रयान लोकनिक तीव्रता अपनबैत छथि ।

हुनक किछु पदमे निरंजन पथक प्रभाव अछि ।ओ गोरखनाथ आओर नाथपंथीक रहस्यवादी शब्दावली आओर मोहाबरा प्रयोगमे अनैत छथि । शरीरमे अष्टकमलक उल्लेख साँसक प्राणायामसँ कुंभकरेचक आओर सम्पूर्ण साधना-पद्धति योग-दर्शनक ढंगपर आधारित अछि ।

ई विवादक प्रश्न अछि जे कबीर सूफी छलाह अथवा नहि ? एकर विचार हुनक "दर्शन" अध्यायमे हम आगाँ करब ।

एकटा आओर झंझट अछि । हुनक रचना सभमे यथार्थमे कोन हुनक छनि, एकरो विचार करए पड़ैत अछि; हुनक बहुतो उत्साही चेला हुनकर नामपर बहुतो वस्तु छापि देलनि; आओर अखनधरि हुनक पदक कोनो एहन एकमात्र प्रामाणिक पाठभेदयुक्त संस्करण नहि छपल

अछि जकरा अन्तिम मानल जाए सकए । तें चयन करबामे बड़ झंझट उत्पन्न होइत अछि पुस्तकक अन्तमे देल गेल सूचीकेँ एहि बातकेँ ध्यानमे राखिये कए सावधानीपूर्वक पढ़ल जएबाक चाही । हिन्दी,उर्दू पंजाबी (गुरूमुखी लिपि) आओर अंग्रेजी अनुवादक रूपमे कबीरक रचनाक जे प्रकाशित रूप उपलब्ध अछि, ओ सभ एहन मौखिक सामग्री पर आधारित अछि जकर मूल पाण्डुलिपि आब अप्राप्य अछि । अतः एके रचना अथवा पदक कतेको रूप भेटैत अछि । ताहि पर मुद्रक सेहो ओहिमे अपन प्रमाद जोड़ि देने छथि । अशुद्ध छपल शब्दक अर्थ सेहो धार्मिक उत्साहसँ ताकल गेल अछि । एहि सभ पुस्तक आओर टीकाकेँ पढ़ब जंगलमे सँ बाट ताकबे सन कठिन कार्य अछि । हम एहि ग्रंथक लेल श्यामसुन्दर दास, हरिऔध, रामकुमार वर्मा, आओर हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा संपादित कबीर-पदावली सभकेँ प्रामाणिक आधार मानल अछि ।

आगाँक पृष्ठमे कबीरक कविता आओर हिन्दी भाषा साहित्यक विकासमे कबीरक स्थान-दूनूक मूल्यांकनक विनम्र प्रयत्न अछि । दोसर अध्यायमे दार्शनिक रहस्यवादकेँ कबीरक योगदानक चर्चा अछि । हुनक रचनामे ई निश्चित करब कठिन अछि जे कविता कतए समाप्त होइत अछि आओर रहस्यवाद कतए आरंभ होइत अछि । वस्तुतः कविता आओर दर्शनक तानी-भरनी हुनक हाथसँ एक कुशल बुनकर जकाँ एक-दोसरासँ घुलि-मिलि गेल अछि । स्वयं कबीर अपन हाथसँ किछु नहि लिखलनि । ओ तँ मात्र गबैत जाथि, कहैत जाथि अपन अन्तर्मनक आँखिसँ देखू । हुनक बानी आबएबला पीढ़ीक लेल तथा लोक-लोकक जिह्वापर रसल-बसल, अनुभवक विषय बनि गेल । जँ कविता कतहु मंत्र-सदृश्य जादू बनि सभकेँ आलोड़ित-बिलोड़ित करैत अछि, तँ से एतए अछि । ओ अपन आत्मानुभवकेँ छोट-छोट सूक्तिमय दोहामे भरि देलनि । प्रत्येक दोहा जीवन भरिक अनुभूतिक जेना गाड़ल बून्न अछि ।

दर्शन

वैदिक द्रष्टा ऋृषिलोकनि कहने छथि "एक सद् विप्रा बहुधा वदन्ति ।" श्वेताश्वतर उपनिषदमे कहल गेल अछि जे "जेना तिलक दानामे तेल, दूधमे मक्खन, सरिताक पात्रमे पानि एवं जाड़निमे आगि रहैत अछि, तहिना आत्माक भीतर "स्व" बसैत अछि । ओकरा जानू-परेखू सत्य आओर मनोयोगक संग ।" सूफी कवि जलालूदीन रूमी (मृत्यु 1273) अपन "मसनवी" मे एक सत्य प्रकाशक विषयमे लिखैत छथि—

दीप अलग-अलग अछि, मुदा प्रकाश एके अछि,
ओ कतौसँ अबैत अछि ।
जँ तों दीप दिशि देखिते रहबह
तँ तो भोतिया जयबह;
कारण ओहीमे सँ असंख्य
आ अनेकताक आभास उभरैत अछि ।
प्रकाशमे दृष्टि लगाबह,
तों मुक्त भए जएबह, ।
एहि ससीम शरीरमे निहित दुइ सँ,
ओ तों, अस्तित्वक सार-निस्सार छह,
मुस्लिम, पारसी, यहूदीक सब भेद,
मात्र दृष्टि-भेद अछि ।

—(निकोलसनक पाठ)

वेदान्ती अथवा सूफीक समान कबीरक रहस्यवाद सेहो ओही कोटिक आओर ओही मात्रामे छल । हुनका लेल ससीम-असीमक कोनो भेद नहि छल । रवीन्द्र नाथ ठाकुर "कबीरक सए कविता" नामसँ अंग्रेजी मे अनुवाद प्रस्तुत कएने छलाह, ओहिमे सँ ई दू पद उदधृत अछि, जकर गद्यानुवाद नीचॉ देल जाइत अछि—

—ओह, ओहि गुह्य शब्दकेँ हम कहिओ कोना व्यक्त कए सकब ? हम ई कोना कहू जे ओ एहन नहि अछि आओर ओ ओहने अछि । जँ हम कही जे अन्दर अछि, तँ जग लजाइत अछि । जँ हम कहैत छी जे ओ बाहर अछि, तँ ई सब फूसि अछि । ओ अन्दर आ बाहरक दुनियाकेँ अखण्ड एक बनबैत अछि, चेतन आओर अचेतन दूनू आकेरक पांबड़ा अछि । ने तँ ओ प्रकट अछि आओर ने अप्रकट, ओ ने तँ व्यक्त अछि आ ने अव्यक्त । ओ की अछि, ई बुझबएबला शब्दे नहि अछि ।

आओर ओ पुनः कहैत छथि——

—जखन ओ स्वयंकेँ प्रकट करैत अछि तँ
ब्रह्म स्वयं ओ सब किछु देखा दैत अछि,
जे कहिओ नहि देखल जाए सकैत अछि ।
जेना पौधा मे बीया अछि, वृक्षमे छाया अछि,
आकाशमे शून्य अछि, तहिना शून्य मे अनन्त रूप अछि
अनन्तेसँ अनन्त अबैत अछि;
आओर अनन्तेमेसँ स्रोत प्रकट होइत अछि ।
तैयो सदा एकत्र अछि ।
ओ स्वंय हद अछि आओर अछि अनहद;
सीम आओर असीम अछि ।
आओर हद अनहद दूनूसँ भिन्न ओ शुद्ध तत्व अछि ।
ओ सर्वव्यापी मन ब्रह्म अछि,
ओएह जीवमे अछि,
परमात्मा आत्मामे देखाए पड़ैत अछि — (साधो ब्रह्म अलख लखाया.....)

कबीर, टेगोर, पृष्ठ-6

कबीरक दार्शनिक रहस्यवादकेँ बुझबाक लेल ओकर तीन तत्वः परमात्मा अथवा बुद्ध, आत्मा अथवा जीव तथा माया अथवा संसार रूपी भ्रमजालक विषयमे विचार कए लेब उचित होएत ।

कबीर ब्रह्मकेँ मूल तत्व अथवा सार कहैत छथि । ओ देश, काल गुण समस्त परिणामसँ भिन्न अछि । ओकरा कोनो परिवर्त्तन

अथवा भेद नहि व्यापैत अछि । ओ मुक्त अछि आओर अन्तिम अछि । ओ कार्य कारण भाषासँ फराक आओर परम अछि । ओ ने तँ बाम अछि, ने दहिने अछि; ने सामने अछि; ने नीचाँ अछि, ने उपर अछि; ओ निरंकार अछि । ओहि दिशि मात्र सकेत कएल जाए सकैत अछिः

वामा नहि, दहिना नहि, सोंझा नहि,
नहि उपर, नहि नीचा, ओ निराकार ।।
—कबीर ग्रंथावली (श्याम सुन्दर दास, पृष्ठ 242)

जेना कि गांधीजी कहने छलाह "ओ यूक्लिदक बिन्दु अछि"

कबीरक परमात्मा निर्गुण अछि । सत्व, रजस, तमस — तीन गुण मानल जाइत अछि; मुदा ब्रह्म एहि तीनू गुणमे व्याप्त नहि अछि । ओ ने तँ जन्म लैत अछि (अजा), ने ओ बढ़ैत अछि, ने ओ मरैत (अमर) अछि ओ मात्र अछि (तत्सत) ।

कबीर ग्रंथावली, पृष्ठ 13 पर ओ कहैत छथि — 'जेना बर्फ पानिसँ बनैत अछि । मुदा पुनः ओए बर्फ पानि मे पिघलि जाइत अछि । तहिना जे किछु छल, ओ अपन रूप मे आबि गेल, आओर आब किछु कहल नहि जाए सकैत अछि । ओ निराकार अछि, ओ रंगहीन अछि । ऐंद्रिय संवेदनासँ मुक्त अछि । ओहीसँ सब भेद आओर स्वयं भेदातीत अछि । "ईश्वर संसार मे छथि, संसार ईश्वर मे अछि तथा ओ सर्वव्यापी छथि ।"

खालिक खलक खलक मे खालिक ।
सब घट रहुयौ समाई ।"
—कबीर ग्रंथावली, पृष्ठ 104

परमात्माक परिभाषा अथवा वर्णन तर्क द्वारा असंभव अछि, कबीर एतबा कहि ठमकि गेनिहार दार्शनिक नहि छथि । कवि होएबाक कारणे कबीर परमात्माकेँ मूर्त्त रूप दैत छथि आओर परमात्मा तथा आत्माक मध्य प्रेमी-प्रेमिका अथवा प्रेमिका-प्रेमीक संबंध तकैत छथि । कबीरक ईश्वर इस्लामक एकेश्वरवाद आओर हिन्दूक बहुदेवतावाद सँ फराक छथि । ओ अल्ला छथि; राम सेहो छथि;

आओर वहुत किछु ।।

कवीर कहैत छथि—
तुर्कक लेल मस्जिदमे, आ हिन्दूक लेल मंदिरमे,
खुदा आ राम दूनू बसैत छथि ।
मुदा जतए ने मस्जिद अछि, ने देवालय
ओतए के समाएल अछि ?

—ज्ञानसागर, पृष्ठ 63

ई परमतत्व आनन्द अछि । ओहि परमानन्दक आगाँ सम्पूर्ण भौतिक सुख व्यर्थ अछि । कबीर ईश्वर प्रेमक नशाकें एना कहैत छथि, जे कहियो उतरैत नहि अछि आओर कम सेहो नहि होइत अछि । ओ कहैत छथि जे एहन दैवी रस दुर्लभ अछि, अतिप्रिय अछि, मुदा सब क्यों ओकरा ने पाबि सकैत अछि आ ने पीबिये सकैत अछि । शंकर-पार्वती ओ रस पान कयलनि आओर अमर भए गेलाह ।

ई परम तत्व ज्ञान अछि, "चित्" अछि । शुद्ध आओर मात्र ज्ञान । ओ सत्य अछि, जकरा पयबाक अछि । ओ असीम, अखण्ड बटबीज — (बरक बीया) सदृश्य सूक्ष्म आओर आकाश सदृश्य विशाल अछि। एहि रूपमे परमात्मा प्रकाश अछि । कबीरक ई परमात्मा सूफी लोकनिक "नूर" अछि आओर कठोपनिषदक "ने सूर्य, ने चन्द्रमा, ने तारा, ने विद्युत" एहन आलोक अछि । कबीर एहि ब्रह्मकें पूर्ण-विकसित सहस्रदल कमलक उपमा दैत छथि, जे हमर शरीर नामक सरोवरमे स्थिर बिहुँसि रहल अछि ।

परम-तत्व शब्द अछि । योगसूत्र मे ईश्वरकेँ "प्रणव" अथवा "ओम्" कहल गेल अछि । ब्रह्मसूत्र सेहो शब्दकेँ ब्रह्म कहैत अछि । नाथ-पंथमे "शब्दे सब किछु अछि-ओ ताला अछि, ओएह कुंजी अछि; शब्द शब्दकेँ जनैत अछि आ शब्दक अन्त शब्दे मे होइत अछि ।" कबीरक एक पद अनहद नादपर अछि; "अनहद नाम सदा बाजै ।" दोसर पदमे ओ कहैत छथि—

औ विद्वज्जन, शब्दक साधन करू,
जे शब्देसँ उत्पन्न भेल अछि, तकरा गहू,
शब्द गुरू थिक, शब्दे थिक शिष्य,
भरिसके क्यो से जनैत छथि,
एकर आन्तरिक अर्थ जे जनैत छथि,
शब्द वेद आ 'पुराण अछि
ओ मानैत छथि प्रामाणिक
अथवा आधिकारिक ।
शब्देसँ ईश्वर, विद्वान आ संत
शब्दक अनन्त सीमाक पार नहि,
ई शब्द सुनि, लोक लबादा बदलैत अछि,
शब्दसँ अनुराग होइछ निर्धारित ।
षड्-दर्शन शब्द थिक, शब्देसँ वैराग्य होइछ ।
शब्देसँ शरीर आ विश्वक उत्पत्ति अछि,
ई असार-पसार शब्दे सँ ।
कहथि कबीर, जतए शब्द अछि,
संसारक भेद अद्‌भुद अछि ।
—कबीर (हजारी प्रसाद द्विवेदी, पद. 57. पृष्ठ 268)

नाथपंथ आओर बौद्ध शून्यवादी सँ प्राप्त बहुतो शब्द कबीर प्रयुक्त कएने छथि । ओ परम तत्वकेँ "सुन्न" अथवा "नाकुछ" कहैत छथि । बौद्ध धर्म "शून्य" सँ कबीरक "सुन्न" भिन्न अछि । ओ शंकरक अनिर्वचनीय ब्रह्मक अत्यधिक निकट अछि । कबीर ईश्वरक अनुभूतिकेँ वर्णनातीत कहल अछि । ओ असंप्रेष्य, अनभिव्यंजनीय, अवर्णनीय अछि । कबीर बेरि-बेरि जाहि "अनमनी" अवस्था दिशि संकेत करैत छथि, ओ रहस्यवादी लोकनिक दैवी उन्मादक अवस्था अछि ओएह समाधि थिक । कतोक बेर कबीर नकारात्मक शब्दावलीक प्रयोग करैत छथि, जेना वेदान्ती करैत छथि "नेति, नेति"। 'केनोपनिषद'मे एक परिच्छेदमे ईश्वरकेँ अप्राप्य कहल गेल अछि जतय ने आँखि, ने वक्तव्य, ने मन, ने ज्ञान—किछु नहि पहुँचि

सकैछ ।" कबीर सेहो ब्रह्मकेँ "ईहो नहि, आ सबसँ अलग" परिभाषित करैत छथि—

वेदातीत, बिरोधरहित

पाप-पुण्यसँ ऊपर,
ज्ञान आ साधना सँ ऊपर
स्थूल आ शून्य सेहो नहि ।
वस्त्र नहि, भीख नहि ।
कोनो रूप, कोनो मद नहि,
कहथि कबीर, तीनू लोकसँ ऊपर,
ओ तत्व अतुलनीय अछि ।

—कबीर ग्रंथावली, पृष्ठ 103

परन्तु इएह निर्गुण ब्रह्म सहसा परिवारक सदस्य बनि जाइत अछि । माता-पिता समान, भर्तार समान (दुलहिन गाबहुँ मगंलाचार, हमारे राजा राम भरतार), अतिथि समान, स्वामी समान (रहौ तो कूकर राम का) । आओर इएह अत्यन्त व्यक्तिगत परमात्मा कबीरक अन्य कवितामे एकदम निर्वैयक्तिक, सर्वातीत, प्रतीकात्मक अरूप तत्व बनि जाइत अछि । कबीरमे एहन बहुतो परस्पर विरोधी बात देखाए पड़ैत अछि ।

अन्ततः कबीरक परमात्मा अछि नाम । हुनका आओरो कोनो नामसँ किएक ने संबोधित करी, की अंतर पड़ैत अछि ? जयदेव राम आओर गोविन्दक स्तुति कएलनि, नामदेव बिट्ठल, आओरो अनेक संत बहुतो नामक आश्रय लेलनि । कबीर अपन एहि पदमे एहन सब नाम गनाए, अन्तमे एहि निष्कर्ष पर पहुंचैत छथि जे-"तोरा क्यो कोनो नामसँ स्मरण करय, तों तँ ओएह रहैत छह ।"

कबीरक आत्माक संबन्ध मे भावना सेहो ओतबे ओझरायल आओर वाहुयतः परस्पर बिरोधसँ भरल अछि । ओ जीव अछि, "सांसा" अछि, "आपुनपौ" अछि, अहम् अछि; नर अछि आ नारी; आओर किछु एहन इन्द्रियातीत चीज अछि, आओर ओ आत्मा अछि जे "पिण्डमे ब्रह्माण्डक अछि । ओ मन अछि, ओ इन्द्रिय अछि, ओ

सांख्यक तीन प्रकारक पुरूषक समान अछि-व्यक्त, अव्यक्त तथा एहि दूनूक ज्ञाता । कबीरक विचारमे इएह आत्म-ज्ञान सबसँ पैघ साधना अछि । घैला कतेको रूपमे बनैत अछि । मुदा अछि, एके माटिक बनल ।गायक रंग कोनो किएक नहि हो, ओहिसँ प्राप्त दूधक रंग एके समान उज्जर होइछ । ओ देहरि पर राखल दीप अछि, जे अन्दर-बाहर एके समान प्रकाश-पुंज पसारैत अछि । ओ "अमर, अजा, अविनासी" अछि । ठीक ओहिना जेना गीता मे आत्माकेँ "अयम् हन्ति न हन्यते" कहल गेल छल ।

श्वेताश्वतर उपनिषदमे आत्माकेँ परम तत्व कहल गेल अछि—

नैव स्त्री न पुमानेष न चैवायं नपुंसकः ।
यद्यच्छरी रमादन्ते तेन तेन स युज्यते ।। 5/10

—ओ ने पुरूष अछि, ने स्त्री; ओ ने नपुंसक अछि, ओ अछि तृतीय लिंग । ओ जाहि शरीरमे जाइत अछि ओही प्रकारक रूप ग्रहण कए लैत अछि । कबीर कहैत छथि—

ई ने तँ मनुष्य अछि, ने देवता,
ई ने तँ सेवा मंगनिहार धर्मात्मा मनुष्य,
ई ने तँ योगी अछि, ने अछि अवधूत,
एकरा ने माय छैक, ने संतति,
ई ने तँ गृहस्थ अछि, ने फकीर
ई ने तँ शाही लोक अछि, आ ने भिखमंगे,
ई ने तँ हिन्दू अछि आ ने शेख,
ने जन्म लैत आ ने मरैत क्यो एकरा देखलक ।

आत्मा निराकार, निस्सीम एवँ सम्पूर्ण परिवर्त्तनसँ पृथक अछि । ओ समुद्रमे 'बुन्न' अछि, ओ ने अलग कएल जाए सकैत अछि, ने समुद्रसँ बिंदुत्व भिन्न अछि । आत्मा अद्वैत, निरंजन, सदाजीवित, सूक्ष्मातिसूक्ष्म,अणोरणीयान् अछि । ओ देहरूपी पिजरासँ एक निश्चित समयपर मुक्त होइत अछि । कबीर अपन बुनकर पेशासँ उपमा दैत छथि—ई शरीर तँ चादरिक समान अछि, जे उपयोगमे

अनलापर मसकि जाइत अछि । तैं ओहिसँ आसक्ति किएक ?"

आत्मा-परमात्मा स्वरूपतः एक थिक । कबीर आत्माक परिचयक लेल कतेको प्रकारक उपमा रूपकक सहारा लैत छथि । आत्मा वृक्ष अछि, आत्मा सूर्य अछि, किरण अछि, प्रकाश अछि, ज्योति अछि जे सबकेँ देखबैत अछि; मुदा स्वयं देखा नहि पड़ैत छथि । आत्मा पक्षी थिक, पिजरा थिक आओर ओहिसँ पृथक आसमान थिक । ओ दीया थिक, बाती थिक, तेल थिक आओर जे सम्पूर्ण अंधकारकेँ भगाबय, एहन प्रकाश थिक । जेना कमलकेँ पानि नहि, ओस नहि, थाल-कादो नहि-किछु नहि छुबि पबैछ, ओहिना आत्मा ओहिमे अछि; मुदा तैयो ओहिमे नहि अछि । आत्मा पवन थिक, आत्मा शब्द आओर सब एक संग अछि । तैत्तरीयोपनिषद् कहैत अछि— "रसौ वै.सः । रसं ह्येवायं लब्ध्वाऽनन्दी भवति । को ह्येवान्यात् कः प्राण्यात् यदेव आकाश आनन्दो न स्यात् ।" अर्थात् आनन्दे आत्मा आओर परमात्मा थिक, आनन्दे आदि आओर अन्त थिक । कबीरमे इएह अनुगूंज भेटैत अछि — आनंदे सब देवता आओर आत्माक आधार अछि । हुनक पंक्ति अछि—

आकास गगन पाताल गगन, दसौ दिसा गगन रहाई ले ।
आनंदमूल सदा परसोतम, घर विनसै गगन न जाई ले ।।
—कबीर ग्रंथावली (श्याम सुन्दर दास, पृष्ठ 187)

आत्माक आधिभौतिक आओर पारलौकिक दू अवस्थाक विषयमे, जकर चर्चा वेदान्ती करैत छथि, कबीर कहैत छथि—"स्वयकेँ स्वयंसँ जानू ।" कबीरक एक साखीक आशय अछि—सुरतिमे निरति तिरोहित भए गेल आओर निरति बिना आधार रहि गेल । मुदा जे सुरति-निरति दूनूकेँ जानि गेल, ओकरा लेल सब द्वारि सहजें अनायास खुजि गेल—

सुरति समाएल निरतिमे, निरति रहल निराधार ।
सरति निरतिकें जे जानय, स्वतः खुजय सबद्वार ।
—कबीर वाङमय (संपा. शुकदेव सिंह, पृष्ठ 69)

एहिठाम सुरति बद्ध-आत्माक लेल आओर निरति मुक्त आओर अनासक्त आत्माक लेल प्रयुक्त शब्द थिक । आत्माकेँ मिथ्या कोना ढांकि (छापि) लैत छैक, ओ भ्रममे पड़ि कोना दिशाहारा होइत अछि, आओर कोना ओ बन्धन तोड़ए चाहैत अछि अन्ततः आत्माकेँ सब आसक्तिसँ मुक्त भए अन्तिम निस्संग अवस्था धरि पहुँचबाक लेल, आत्माकेँ अहम्-विरहित, दोषरहित, आत्म-ज्योतिक साधना करबाक होइत अछि ।

जगत् अथवा मायाक प्रति कबीरक वृत्ति कोनो कम महत्वक नहि अछि । उपनिषद मे मायाकेँ ब्रह्मक जीवनी-शक्ति कहल गेल अछि । ओ प्रकृति आओर अविद्या अछि । गीता मायाकेँ अज्ञान, तीन गुणक जादूगरनी कहैत अछि । शंकर ओकरा अध्यास मानैत छथि, आओर आधुनिक भाषा-वैज्ञानिक दार्शनिक जकरा "मानसिक संरचना" कहैत छथि, तेहने-सन किछु वस्तु कहैत छथिन । कबीर अनेक उत्प्रेक्षासँ एहि तत्वक शक्ति वर्णित करैत छथि । ओ कहैत छथि जे माया एहन लता अछि कि ओकरा पटाएब तँ मुरझा कए खसि पड़त; ई नाना गुणयुक्त एहन लता अछि, जकर वर्णनक शब्द नहि—

जे काटौं तो डहडही, सींचो तो कुमिलाइ ।
उस गुणवती बेलि का, कुछ गुण कहूया न जाइ ।।
—कबीर ग्रंथावली (श्याम सुन्दर दास, पृ. 86)

माया एहन नागिन अछि जे अपने समान बहुत बच्चा उत्पन्न करैत अछि ओ क्षणभंगुर अछि, पल-छिन बदलैत जाइत अछि । ओ बहुत मथनिहारि अछि । ओहीसँ दुख अछि । ओ कुहेसक पातर चादरि समान अछि, ओ बाड. (कपास) मे नुकाएल आगिक समान अप्रकट आओर प्रकट दूनू अछि । सजल-धजल वेश्या अछि जे मुक्त-प्रवेश बाजारमे जीवकेँ लोभबैत अछि आओर ठकैत अछि । ओएह सब भेद-भावक कारण थिक आओर ओही सँम्पूर्ण रचना अछि । दोसर शब्दमे—

जे ई चित्र बनौलक ओएह अछि यथार्थ कठपुतरीबाला ।

मुदा से धिक्कार अछि तकरा, जे चित्रकेँ मात्र चित्र कहैत अछि एही दार्शनिक मान्यताक संग, कवीरक मुक्ति अथवा अन्तिम मोक्षक विचार गंभीरतासँ संबद्ध अछि । प्रत्येक भारतीय मनीषी आओर संतक पहिल चिन्ता एहि दुख-सागर सँ त्राण, एहि संसारसँ मुक्तिक रहल अछि । कबीर अमरताकेँ एहन अंतिम मूल्य मानैत छथि, जकर खोज प्रत्येक मनुष्यक लेल आवश्यक छैक । अन्तक संग महामिलनकें, जन्म-विवाह-मृत्युक चक्रसँ उबरनाइकेँ ओ "जोत" (ज्योति) कैं "जोत" मे विलीन भए जाएब मानैत छथि । योग दर्शन आओर बौद्ध दर्शनक समाने हुनक मुक्ति अथवा निर्वाणक कल्पना छनि । बौद्ध दार्शनिक नागार्जुन निर्वाणकें "परमार्थ सत्य" मानल अछि । कबीर ओहि अवस्थाकेँ "निरभै पद" कहैत छथि । एक बेरि साधक सभक सहायता आओर सेवामे लागि जाए आओर दृष्टि ओ "समत्वं योग-मुच्यते" वला इयत्ता पाबि जाए तँ पुनः ओकरा डर किए ? यदि डर बचलो रहैत अछि, तँ से भीतरक पाप अछि—

अपनै परचै लागि तारी, अपन पै आप समाना ।
कहैं कबीर जे आप आप विचारै, मिटि गया आवनजाना ।
—कबीर ग्रंथावली (श्याम सुन्दर दास, पृष्ठ 90)

—एक कैं जानि लेलापर "समत्व बोध आ समत्व योग" सँ परिचय भए जाइत छैक । एकमे एक-अर्थात् आत्माक परमात्मासँ मिलन भए जाइत छैक आओर "दुई" अथवा द्वयताक बोध नष्ट भए जाइत छैक । एहि लेल कबीर "स्वयकें जानि लिय" पर जोर दैत छथि—जाहिसँ सम्पूर्ण आएब-जाएब अथवा "आवागमन" समाप्त भए जाए ।

कबीरक दृष्टिमे बंधन मात्र व्यक्तिगत आभास थिक । एकबेरि ओ टूटि गेलापर शुद्ध अद्वैत आओर अभेद बचैत अछि । "दूई" रहिते नहि अछि ।

दू गोट घैला पानिमे भंसिया रहल अछि । ओहिमे प्रतिबिम्ब पड़ि रहल अछि । दूनू घैला फूटि जाइत अछि । प्रतिबिम्ब तिरोहित भए जाइत अछि । तथापि, विस्तृत जलमे ओएह प्रतिबिम्ब देखा

पड़ैत अछि—सब बिम्ब एक अछि । एही प्रकारें कबीरक लेल मुक्ति कोनो वाहुय वस्तु नहि अछि, वाहुय कारणसँ प्रेरित स्थिति नहि अछि । ई तँ अन्तर सँ जागृत भेनिहार कामना थिक जे एहि भ्रम आओर मिथ्यासँ हमरा लोकिन पृथक होइ; आओर एक बेरि ओहि "जीवनमुक्ति"क अवस्थामे पहुंचि जतए दुनिया भरिक अन्धकार आओर आत्माक अंधता समाप्त होइत अछि ।

एहि स्थिति धरि पहुंचबाक लेल कबीर एक क्रमबद्ध साधना-मार्ग निर्देशित करैत छथि । ओहिमे यम, नियम, प्राणायाम, संयम आदि छैक, परन्तु तकर चर्चा एतए आवश्यक नहि । चलैत-चलैत एहिठाम एतबे कहब पर्याप्त होएत जे कट्टर कबीर-पंथी लोकनियोमे एहि सब विधि एवं प्रणालीक विषय मे सहमति नहि अछि । शरीर पर अनुशासन प्राप्त कए, एक सम्पूर्ण मनोवैज्ञानिक प्रक्रियासँ गुजरि, आध्यात्मिक चेतना जगौनिहार ओ मार्ग अछि, जकरा विविध योग-पंथमे विस्तारसँ कहल गेल अछि । कबीरक वृत्ति मधुकर (भमरा) समान अछि-ओ सर्वसंग्राहिका शैलीसँ प्रत्येक योग-शैलीक सर्वोत्तम अपनबैत अछि, खाहे ओ हठयोग हो अथवा मंत्रयोग, लय योग, सहजयोग हो अथवा राजयोग । ओतए साधु समान दिनचर्या पर आध्यात्मिक अर्थपूर्णताक विधान अछि । कबीरकेँ सामाजिक आओर नैतिक सुधारक रूपमे आजुक क्रान्तिकारी सेहो महत्व दैत छथि । जाति-भेदक नाम पर मनुष्य-मनुष्यमे विषमता आओर सामाजिक असमानताक मूर्खताक जाहि प्रकारसँ बुद्ध निषेध कएने छलाह, कबीर सेहो तकर घोर निन्दा कएलनि । ओ हिन्दू तथा मुसलमानक अंध-श्रद्धाकेँ, बादक वैज्ञानिक विवेकवादीये जकाँ चुनौती देलनि, तथा हुनक ढोंग आओर मिथ्याकेँ सिद्ध करबाक आहुवान कएलनि । ओ यथार्थवादी छलाह, हुनका एना गबैत कोनो लाज नहि होइत छलनि—

भूखल साधना नहि क 'सकैछ,
लिय अपन ई माला,
हमरा मात्र आधा सेर अन्न चाही,

दू सांझ पेट भरबा लेल ।
सुतबाक लेल हमरा खाट चाही
ऊनक बनल एक तकिया,
ने हम फूसि, ने अतिशयोक्ति कहै छी,
हे प्रभु, हम तँ मात्र अहीक नाम लैत छी ।
—राग सोरठा, कबीर ग्रंथावली (श्याम सुन्दर दास, पृष्ठ 314)

ओ जमाखोरी तथा पैसाक गर्व आओर प्रदर्शनक बिरोधी छलाह । ओ सब प्रकारक विलास तथा निसाँक बिरोधी छलाह । ओ सादगी तथा संतोषक प्रचारक रहथि संगहि ओ एहिमे विश्वास करैत छलाह जे प्रत्येक कैं शारीरिक श्रम तथा अपन-अपन कार्य करबाक चाही; ककरो कोनो दोसर व्यक्तिक सम्पत्तिक चोरि नहि करबाक चाही । राज-लोभ आओर राजनैतिक अपराधीक ओ निन्दा कएलनि अछि । ओ प्रश्न कएलनि-"सेना जुटाएब आओर किलाक घेराबंदी करब तथा अपन शक्ति-प्रदर्शन करब, की राजाक इएह कार्य अछि ? जखन राजा मरि जाइत अछि, तँ एहि खेलक की बचल रहि जाइत अछि ?"

"एहन राजा लग करोड़ो रूपैया आओर हाथी रहए, तथापि एहन कंजूसक सम्पत्तिक कोन उपयोग ?"

"राजा आओर प्रजो दूनू तँ एक आदमीये छथि । दूनू एके मूल "ओम" सँ निकलल छथि ।"

कबीर सब प्रकारक संप्रदायवाद, संकीर्ण मन एवं दृष्टिकोणक कटु आलोचक रहथि । "ने ब्राह्मण उच्च जातिक छथि आ ने शूद्र । तखन किएक एक-दोसरासँ घृणा करैत छथि ? ई मूर्खता थिक ।"

ब्रह्माचार अर्थहीन अछि । सम्पूर्ण शरीरपर भस्म लेपन करब, दिनमे तीन बेरि धर्मक नामपर स्नान करब, उपवास राखब, तीर्थ-यात्रा पर जाएब, माला फेरब, जोर-जोरसँ ईश्वर नामोच्चारणक प्रदर्शन करब, अपन शरीर कैं दण्डित करबामे आनंद लेब ई सब कबीरक तीव्र व्यंग्य आओर घोर उपहासक विषय अछि—

ई शरीर जे माटिक बनल अछि.
ओहिपर मांटि किएक भरैत छिऐक ?
एहि चलैत-फिरैत रूपकेँ कुरूप किएक बनबैत छिऐक ?
की लाभ अछि नामोच्चार आओर माला जपबाक ?
मस्जिदमे जाए बंदगी (प्रणाम) क कोन लाभ अछि ?
ई उपवास, व्रत नियम-निष्ठा अथवा हज
आओर कावा जएबाक की अर्थ अछि ?
ब्राह्मण चौबीस एकादशीक उपवास रखैत छथि
आओर काजी मुहर्रम रखैत छथि ।
(अलह रामजीऊँ तेरे नाई . . . . . " कबीर ग्रंथावली सम्पा. माता प्रसाद गुप्त, पृष्ठ 301)

कबीर आगां कहैत छथि——

जँ प्रभु मस्जिदमे रहैत छथि,
तखन पृथ्वीक अन्य भागमे के रहै छथि ?
जँ राम तीर्थ-स्थानमे निवास करैत छथि
आओर मूर्ति मे;
तखन एकेसंग दू स्थानमे कोना रहै छथि ?
पूर्व मे हरि,
पश्चिममे अल्लाहक निवास ।।
हृदयमे ताकू, अपन अन्तस्तलमे
राम आ रहमान ततहि रहै छथि ।
विश्वक सभ स्त्री-पुरूषमे
कबीर अल्लाह आ राममे विनत छथि,
हरि आ पीर छथि हमर गुरू ।
—कबीर (हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृष्ठ 272-73)

कबीर अत्यन्त चोखगर आओर समीचीन उत्प्रेक्षा लिखैत छथि— "जँ पवित्र डोरी (जनउ) पहिरि लेलेसँ क्यो द्विज भए जाइत अछि तँ रहट कैं किएक नहि ब्राह्मण मानि लेल जाए जकरा गरामे सदिखन डोरी लागल रहैत छैक । "मस्जिदक ऊंच गुम्बद पर चढ़ि काजी

एतेक कंठ फाड़ि बांग किएक दैत छथि ? की देवता बीहर छथि ?"

कांकर पाथर जोरि के मस्जिद लियो बनाय ।
ता चढ़ि मुल्ला बांग दे, क्या बहिरो भयो खुदाय ।।

एहि प्रकारें, अपन दोसर दोहामे मांसाहार हेतु जीव-हत्यापर कबीर दासक टिप्पणी छनि—

'बकरी घास खाइत अछि, तकरो छलरी छीलल जाइत अछि । आ जे बकरीये कें खाइत छथि, हुनकर की हेतनि ?" एहि मूर्खकेँ तँ देखू, जे मृतकक पूजा करैत छथि । श्मशानमे जाए मुर्दा जरा अबैत छथि आओर बड़ प्रेम तथा आसक्तिक प्रदर्शन करैत छथि । जखन जीवित रहैत छथि तखन बूढ़-बुढ़ानूसकेँ डंटासँ पीटैत छथि, मरि गेलापर हुनक मुँहमे गंगाजल ढारैत छथि । जखन जीबित रहैत छथि, तखन तं भुंखले रखैत छथि आओर जखन मरि जाइत छथि, तखन हुनका पिण्डदान करैत छथि । जखन बूढ़ा जीवित रहैत छथि, तं हुनका गारि-फज्झति देल जाइत छनि, आओर जखन मरि जाइत छथि, तखन हुनक श्राद्ध कए श्रद्धा देखओल जाइत अछि । कबीरकेँ आश्चर्य होइत छनि जे कौआकेँ खुअयलासँ मृतक पितरकेँ ओ अन्न कोना कें पहुँचैत छनि ? एहन आशयक बहुतो पद कबीर-ग्रंथावली मे अछि ।

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी अपन प्रसिद्ध ग्रंथ "कबीर" में ई सिद्ध कएलनि अछि जे कबीरक वाहुयाचार आओर मात्र धार्मिक विधिक प्रदर्शनक आलोचना हठयोगी आओर कबीरक गुरू रामानन्दसँ प्राप्त परम्परा थिक । ओ कहैत छथि—

"जाहि समयमे कबीर दासक आविर्भाव भेल छल, ओहिसपय मे हिन्दूमे पौराणिक मत सैह प्रवल छल । परन्तु ई साधारण गृहस्थक धर्म छल देशमे आओरो बहुतो प्रकारक साधना प्रचलित छल । क्यो वेदपाठी छलाह तँ क्यो उदासी; क्यो एहन नहि छल, जे दीन बनल घुमैत छल । क्यो तँ दान-पुण्ये मे व्यस्त छल; क्यो मदिरा-सेवनेकेँ चरम साधना मानैत छल, तं क्यो तंत्र-मंत्र औषधादिक चमत्कारेसँ

सिद्ध बनल घुमैत छल । क्यो सिद्ध छलाह तं क्यो तीर्थव्रती आओर धूम्रपानसँ शरीर कैं कारी लोहाठ बना रहल छल । सब छल, मुदा क्यो रामनाम मे लीन नहि छल । सद्गुरू (रामानन्द) क कृपासँ कबीरदासकैं ई महामंत्र प्राप्त भए गेल छलनि । ओहि समय मुनि रहथि, पीर रहथि; दिगम्बर, योगी, जंगम, ब्राह्मण, सन्यासी — सब रहथि; मुदा सब मायाक चक्कर मे पड़ल रहथि । कोनो-कोनो सप्रदायमे तँ तोप-बंदूक धरि चलल करैत छल । कबीर दास तंग आबि लोक सबसँ कहल करथि जे ईहो एकटा अजब योग अछि जे महादेवक नाम पर पंथ चलाओल जाइत छल । लोक पैघ-पैघ महंथ बनैत छथि, हाट-बाजारमे समाधि लगबैत छथि आओर अवसर पबिते तोप-बंदूक लए आक्रमण करैत छथि । भला दत्तात्रेय कहिओ मवासिया (किला) तोड़लनि अथवा आक्रमण कएने छलाह, शुकदेव भला कहियो शस्त्र संग्रह कएने छलाह, नारद कहियो बन्दूक चलौने छलाह ?

"ईहो अलबत्ते विरक्त छथि, जनिक सुतबाक तोसक जगमगा रहल अछि, हाथी-घोड़ाक ठाठ अछि, करोड़पति-सन शान छनि । रंग-ढंगसँ एहन लगैत अछि जेना नागा सभक कुभंक आक्रमणसन कोनो घटना रहल होइक । एहि प्रकारें बहुधा विचित्र वाह्याडम्बर मूलक साधनक बीच कबीरदास अपन प्रेम-भक्तिक प्रारंभ कएने छलाह ।"

—कबीर (पृष्ठ 128)

हठयोगी परम्पराक चर्चा करैत डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी आठम शतीक सरोरूहपाद (सरहपाद) नामक आरम्भिक सहजयानी सिद्धसँ (पृष्ठ 142-43) एक उद्धरण दैत छथि, जे अत्यन्त मनोरंजक अछि—

"ब्रह्मणेहिम जाणन्तहि भेउ । एवइ पढ़िअउऐ च्चउवेउ ।
मट्टी पाणी कुस लइ पढ़न्त । धरहिं बइसी अग्गि हुणन्तं
कज्जे विरहिअ हुअबह होमें । अक्खि डहाविक कडुए धूम्मे ।।

सरहपाद, दोहाकोश (दोहा एवं 2)

ब्राह्मण ब्रह्माक मुँहसँ उत्पन्न भेलाह । जहिया भेलाह तहिया भेलाह सम्प्रति ओहो तहिना उत्पन्न होइत छथि जहिना दोसर लोक । तखन ब्राह्मणत्व रहल कतए ? जँ ई कहल जाए जे संस्कारसँ ब्राह्मणत्व होइत छैक तँ चाण्डालकेँ सेहो संस्कार दए किएक नहि ब्राह्मण बनए देल जाइत छैक ? जँ ई कहल जाए जे ई लोकनि हाथमे कुश-जल लए घर बैसल हवन करैत छथि; जँ आगि मे घी ढ़ारि देलासँ मुक्ति होइत छैक तँ किएक नहि से सब केँ ढ़ारए देल जाइत छैक ? होम कएलासँ मुक्ति भेटौक अथवा नहि, धूआं लगलासँ आंखिकेँ कष्ट धरि अवश्य होइत छैक । सिद्धि लोकनिक इएह साफ-साफ आलोचना आओर स्पष्टवादिताक परम्परा कबीर आगाँ चलौलनि ।

जी. एच. वेस्टकॉटक 'कबीर एण्ड द कबीरपंथ' (पृष्ठ 37 सँ 40 धरि) मे कबीरक बानीसँ निम्न उद्धरण अनुवादमे देल जाइत अछि

"मालाक मनका (दाना) काठीक अछि, देवता पाथरक । गंगा-जमुना पानि थिक । राम आओर कृष्ण मरि चुकल छथि । चारू वेद मात्र काल्पनिक कथा थिक ।"

"जँ पाथर पुजलासँ भगवान भेटथि, तँ हम
पहाड़ पूजब । एहि मूर्त्तिक पाथरसँ तँ नीक थिक
ई जाँत, जकर पीसल आँटा लोक खाइत अछि।"

"जँ पानिमे निमज्जन कएलासँ मुक्ति भेटितए, तँ बेड. सदा पानिए मे डूबल रहैत अछि । एहि बेड. क समाने ई लोकनि छथि जे बेरि-बेरि "गरभवास" मे पड़ैत छथि ।"

"हथौड़ासँ पाथरक मूर्ति बनैत अछि । ओकर छाती आओर पएर होइत अछि । यदि मूर्त्ति यथार्थ अछि तँ निश्चिते ओ हथौड़ी वलाकेँ खाए जाएत ।

"गर्भवास मे रहैत ने कोनो जाति होइत अछि, ने कोनो वंश । ब्रह्मक बीजसँ सम्पूर्ण सृष्टि बनैत अछि ।"

"जँ तों ब्राह्मण स्त्रीसँ उत्पन्न भेल छह, तखन तों आन मार्ग सँ किएक नहि अएलह ?'तुम कत बाम्हन हम कत शूद । हम

कत लोहू, तुम कत दूध ।" कबीर कहैत छथि जे ब्रह्मक विचार करैत छथि, सएह ब्राह्मण छथि ।"

"पानि मैल अछि, धरती मैल अछि । जन्मक समय मैल अछि, मृत्युक समय मैल अछि । सम्पूर्ण नाश मैल अछि ।

आँखि मैल अछि, जीभ मैल अछि, कान मैल अछि । उठैत-बैसैत मैल आदमीमे सटैत अछि, मैल अन्नमे खसैत अछि ।"

"जाल मे फँसब सब जनैत छथि, मुदा ओहिसँ मुक्ति पाएब बहुत कम लोककेँ अबैत छैक ।"

कबीरक बहुतो उक्ति आओर पद सिक्खक आदि ग्रंथमे "साखीक" रूपमे सम्मिलित अछि । मोकालिफक "सिख रिलीजन" (दू खण्डमे) आओर "सेलेक्सन फ्रॉम सैक्रेड बुक ऑफ द सिक्ख" मे एहन कतेको पद भेटैत अछि ।

कबीर एहन रहस्यवादी नहि छलाह जे कोनो आध्यात्मिक पर्व कन्दरेमे रहैत छलाह, जन कोलाहलसँ दूर । बनारसक सोझमतिया जोलहाक कुटीसँ (जतय ओ रहैत छलाह), आओर असीघाट (जतए ओ मुइलाह जेना कि मानल जाइत अछि) क बीच ओ धर्मक नामपर किछु ढ़ोंग, मिथ्या दंभ चलैत देखने होएताह आओर ओ ई सब देखि बौक-बहीर नहि बनल रहलाह । ओ सत्य बजैत रहलाह, जनिका लेल ओहि समयमे बहुत अधिक साहस आवश्यक छल । ओ एहन युग छल, जखन युक्तियुक्त ताक प्रभाव छल आओर रूढ, स्थापित धर्मक बिरोधकेँ सबसँ पैध पाप मानल जाइत छल । परन्तु कबीर ई धर्मद्रोह बड़ निर्भीकता सँ व्यक्त कएलनि आओर ओकर प्रभाव सेहो तेहन पड़ल जे हिन्दू हुनका वाध्य भए संत मानि आदर देबए लागल । हुनक पंथ-कबीरपंथ, चलि पड़ल ।

अध्यायक अन्तमे, कबीरक एक पद, जाहिमे हुनक दर्शन तेहन काव्यात्मक ढ़ंगसँ व्यक्त भेल अछि, जकर मैथिली रूपान्तर रवीन्द्र नाथक अंग्रेजी अनुवादसँ प्रस्तुत कएल जा रहल अछि । एहिपद "तीरथमे तो सब पानी है" (पृष्ठ 50) मे कबीरक जीवन दर्शन अत्यन्त काव्यात्मक रूपमे व्यक्त भेल अछि ।

—"पवित्र तीर्थ स्थान मे मात्र पानि अछि । हम जनैत छी,

ओ व्यर्थ अछि । कारण हम ओहिमे नहा चुकल छी । सब मूर्ति निर्जीव अछि, ओ बौक अछि, हम जनैत छी, कारण हम ओकरा चिचिया-चिचिया कए बजौलिऐक अछि । पुराण आओर कुरान शब्द मात्र अछि । परदा उठा कए हम देखलिऐक अछि । कबीर अपन शब्दक अनुभवसँ बजैत अछि, कारण ओकरा ठीक सँ पता छैक जे शेष सब बात फूसि अछि ।"

कविता

अयोध्या सिंह उपाध्याय "हरिऔध" द्वारा सम्पादित एवं संकलित "कबीर वचनावली" ग्रंथमें कबीर साधककेँ "शब्द" (ब्रह्म) चिन्हबाक लेल कहल अछि । मूल पदक रूपान्तर निम्न प्रकार सँ अछि—

शब्द केँ ताकू शब्दकेँ जानू ।
शब्दसँ शब्दकेँ अनुसरण करू ।।
शब्द अछि आकाश, शब्दे पाताल ।
शब्द अछि सर्वव्यापी, शब्दे संसार ।।
शब्दे अछि मूर्ति आ शब्दे अछि रूप ।।
शब्दे अछि वेद आ शब्दे अछि ध्वनि ।
शब्दे अछि शास्त्र नानारूपसँ गाओल गेल ।।
शब्दे दृश्य अछि, शब्दे अछि अदृश्य ।
शब्दे रचैत अछि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड ।।
कबीर कहैत छथि जे शब्दकेँ परेखू ।
शब्दे ईश्वर छथि, बन्धु ।।

संस्कृत काव्य-शास्त्री आओर पश्चिमक सौंदर्यशास्त्री लोकनि मे ईहो दीर्घ बहसक विषय अछि जे रहस्यवादी कविताक मूल्यांकन की ओही मानदंडसँ करबाक चाही, जाहि सँ शुद्ध कविताक कएल जाइत अछि ? अंशतः ई ओएह पुरना भेद-उदात्त आओर सुन्दरताक मध्य अछि । भारतीय काव्यशास्त्र लिखनिहार सर्वसंग्रहक समीक्षक लोकनिमे ओकरा "ब्रह्मानन्द सहोदर" कहल गेल अछि । दोसर दिशि हिन्दीमे किछु रुढ़िवादी आओर पोंगापंथी आलोचक आइयो छथि जे कबीरकेँ नहि मानैत छथि । अपितु हुनका ओहि संत आओर भक्तक कोटिमे गनैत छथि जे किछु उभड़-खाभड़ पद्य रचना कएलनि । एहन समीक्षक काव्यमे रीति, शैली आदिक चाक्‌चिक्य

अथवा परिपूर्णतापर किछु अधिके बल दैत छथि । परन्तु जँ कोनो महाकविक एक लक्षण ओकर विलक्षण अथवा विशिष्ठ व्यक्तिओ अछि, तँ निःसंदेह कबीर एहने कवि छथि ।

कबीर कखनो-कखनो अस्पष्ट बिम्ब आओर प्रतीकक प्रयोग करैत छथि, यद्यपि ओतेक अस्पष्ट नहि होइत अछि, जतेक किछु आधुनिकतावादीक होइत अछि । अंग्रजी कवि विलियम ब्लेक अथवा जर्मन कवि रेनर मारिया रिल्के जकाँ कबीरो मे एहन अनेक स्थल अछि, जे सुनबामे अत्यन्त सरल लगैत अछि; परन्तु ओहिमे गूढ़ आध्यत्मिक अर्थ भरल अछि । सत्य तँ ई अछि जे कबीर मात्र कविये नहि छलाह । ओहिसँ बेसी ओ बहुत किछु छलाह । ओ एके समय दू आयामकेँ जीबैत छलाह । हुनका लेल ईश्वर-चेतना आओर कविता विश्लेषण कएल जाएबला दू फराक-फराक मानसिक स्थिति नहि छल । जर्मन रहस्यवादी मेइस्टर एरवार्ट ठीके कहने छलाह-मनष्य केँ परममे एक होएबाक चाही । अपनामे आओर ओहि परम तत्वमे एकता तकबाक चाही । जकर अर्थ जे ओकरा ईश्वर आओर मात्र ईश्वरेक दर्शन करबाक चाही आओर तकरा बाद घूमि अएबाक चाही । जकर अर्थ ई होइत अछि जे ओकरा ईश्वरक ज्ञान होएबाक चाही आओर तकर चेतनो होएबाक चाही ।।"

कबीर ओही परम देवी आनन्दसँ प्रेरित छलाह, जाहि कारणें ओ पुछैत छथिः "रे कमलिनी, तों तँ पानिमे जन्म लेलह, पानियेमे रहलह, सदा पानियेसँ घेरल रहलह, कतौ कोनो आगि तोहर लगपासमे नहि छलह, तैयौ तोँ मौला किएक गेलह ?"

कबीर ग्रंथवाली (संपा. माता प्रसाद गुप्त, पृ. पृष्ठ 183)

भाषा

कविता द्वारा कवितासँ भिन्न ई विशिष्ट संवेदनशीलता जे संप्रेषित होइत अछि, ओकर एक महत्वपूर्ण कुंजी अछि-कवित्वक भाषा । प्रत्येक कवि अपन खास लोकोक्ति चुनैत अछि, आओर अपन काल्पनिक श्रोताकेँ कविता सुनबैत अछि । कबीरक महानता एहीमे अछि जे ओ ओहि भाषाक कोनो परवाहि नहि कएलनि जे पण्डित समाजक संस्कृत अथवा राजदरबारक फारसी छल । मुदा ओ अपन पद आओर गीत एहन मिश्रित भाषामे रचए लगलाह जकरा विद्वान लोकनि "सधुक्कड़ी" कहलनि अछि । डॉ. गोविन्द त्रिगुणायतक कथन अछि... "कबीर कोनो एक भाषाक प्रयोग नहि कएलनि । हुनक बानीमे हिन्दी, उर्दू, फारसी आदि कतेको भाषाक सम्मिश्रण तँ भेंटिते अछि, संग संग अवधी, खड़ी, भोजपुरी, पंजाबी, मारबाडी आदियोक प्रचुर प्रयोग कएल गेल अछि ।" कबीर की विचार धारा" (पृष्ठ 295) संवत् 156। आओर 1881 "अर्थात् ईस्वी 1508 तथा 1928 दू प्रचीन पाण्डुलिपिक आधार पर डॉ. श्याम सुन्दर दास द्वारा सम्पादित "कबीर ग्रंथावली" सबसँ पहिल आओर प्रामाणिक संकलन अछि । दोसर अछि डॉ रामकुमार वर्माक "संत कबीर" जाहि मे गुरु ग्रंथ साहिब सँ कबीरक जे पद अछि, सेहो संकलित अछि । एहि दूनू ग्रंथ मे हम पबैत छी.....

1. पंजाबीपन
2. भोजपुरीक संज्ञा आओर क्रिया रूप
3. खड़ी बोलीक किछु रूप
4. विषयानुसार भाषा
5. प्रादेशिक भाषामे सँ कतेको देशज शब्द
6. सोझ-साझ अभिव्यंजना
7. प्रतीकवाद आओर उलटबासी

8. कोनो एक मानक रूपक अनुकरण नहि ।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल अपन ग्रंथ "हिन्दी साहित्य के इतिहास" में लिखलनि अछि जे संत-कविगण ओहि खड़ी बोलीक प्रयोग कएलनि अछि, जे हुनका लोकनिकेँ सिद्ध लोकनिसँ प्राप्त भेल छलनि । डॉ. त्रिगुणायतकेँ एहि बातसँ मदभेद छनि । ओ कहैत छथि जे कबीर स्वयंकेँ मात्र पुरबी बोली धरि सीमित नहि रखलनि, अपितु एहन बोली सभ प्रयोग कएलनि जाहिसँ हुनक बानी ठाम-ठामक साधुगणक लेल सहज संप्रेषणीय अछि । कबीर जखन हिन्दू पण्डितक चर्चा करैत छथि तँ फारसी मिश्रित हिन्दीक प्रयोग करैत छथि । हुनक पदमे जँ बंगाली क्रिया-रूप "आछिलो" आदि भेटैत अछि, तँ राजस्थानी आओर लहंदाक रूप सेहो प्राप्त होइत अछि । हुनक भाषाक ईहो विशेषता अछि जे ओ एक संग सरल आओर अर्थवत्ताक दृष्टिसँ ओतबे कठिन अछि । मौखिक परम्पराक कारण एके पदक अनेक पाठ भेटैत अछि, कबीरक पदक मामलामे ई एक आओर पैघ असुविधा अछि । कतेको शब्दक रूप एतेक बदलि गेल अछि आओर ओहिमे एतेक अपभ्रंश भेलैक अछि जे ओकर मूल अथवा प्रामाणिक रूप ताकब अथवा उत्खनित करब अत्यन्त कठिन अछि । अपन अस्पष्टता आओर अनेकार्थवाचिताक कारण कबीरक "उलटबाँसी" भाषाकेँ "संधा भाषा" (विधुशेखर भट्टाचार्यक अनुसार) अथवा "संध्या भाषा" कहल गेल अछि । अर्थात् ओ कतेको भाषाक संधि अछि अथवा संध्याकालक धुंध-समानक भाषा अछि । डॉ शशि भूषण दास गुप्ता अपन पुस्तक "आब्सक्योर रिलीजस कल्ट्स" मे एहन पहेलीबुझौअल बला भाषाक कतेको कारण गनौलनि अछि । ओ वा तँ शत्रुकेँ जानि-बुझि कए चक्करमे देबाक लेल प्रयुक्त कएल गेल अछि, अथवा ओ अपभ्रंश आओर हिन्दीक मिश्रण अछि, अथवा पुनः ओ बंगाल आओर बिहारक सीमा रेखाक भाषा अछि । संस्कृत मे "संधि" शब्द रूपकात्मक अथवा गुह्य भाषाक लेल प्रयुक्त भेनिहार शब्द थिक । भए सकैत अछि, कबीर जानि-बुझि कए एहि भाषाक प्रयोग कएने होथि, जेना, तांत्रिक अपन गुप्त धारणा अथवा लोक-विलक्षण

विचित्र क्रियाक जनसाधारणमे करब उचित नहि बुझैत छथि । कारण जे किछु रहल हो, कबीर पण्डित लोकनिक क्लिष्ट संस्कृतक उत्तरमे, हँसी-मसखरीयेमे किएक नहि हो, एहन भाषाक प्रयोग कएलनि । ओकर किछु नमूना निम्न "परस्पर विरोधाभास" अनुच्छेदमे देल जाए रहल अछि ।

विरोधाभास

कबीरक ई पद सभ "उलट बॉसी" अथवा उलट-बतिया" कहबैत अछि । कबीर ग्रंथावली (पृष्ठ 141) सँ एक पद उधृत कएल जाए रहल अछि .....

गुरु हमरा एहन अद्‌भुत बात कहलनि,
हम भेलहुँ हतप्रभ
मूस लड़ए हाथीसँ
ई क्यो-क्यो देखैत अछि ।
मूस विवरमे पैसल
डरि कए भागल सांप
मूस गिरलक सांपकेँ
ई छल पैघ अचंभा ।
चुट्टी ढाहलक पहाड़केँ
अनलक ओकरा फर्दमे
मुर्गा लड़ए लोकसँ
पानिसँ मांछ पड़ाय ।
गाय पिआबए बछरूकेँ
बाछा दिअए दूध
एहन अद्‌भुत घटित भेल
हरिण मारलक बाघ ।
बनमे सुटकल आखेटक
खरहा चलबय तीर
कहथि कबीर, तनिके गुरु मानू
जे एहि कविता-अर्थ बुझाबथि ।

डा. हजारी प्रसाद द्विवेदी "कबीर" ग्रंथ मे एहि पदक चर्चा भोगपरक रूपक और उलटबाँसियाँ" अध्यायमे कएलनि अछि । "कबीर ग्रंथावली" (पृ.141) मे सँ एक आओर पद उधृत करैत ओ विश्वनाथ, विचार पास आदि अन्य परम्परावादी द्वारा उल्लिखित 23 एहन सांकेतिक शब्दक तीन भिन्न अभिप्राय सेहो स्पष्ट करैत छथि । पद निम्न अछि.....

(संतन जागत नींद ना कैये.....।)

संतजन, जगइत नींद सूतय ।
काल ने खाय, कल्प नहि व्यापय, देह जरा नहि नाशय ।।
उलटि गंग समुद्रहि सोखय, ससि आ सूर गरासय ।
नवग्रह मारि रोगी बैसल, जलमे बिम्ब परकासय ।।
चरण बिना दसोदिस दौड़य, बिनु लोचन जग सूझय ।
सिंह ग्रसित भेल खरहासँ, ई अचरज क्यो बूझय ।।
औन्हल घैल जलमे नहि डूबय, पेन-भरें जल भरिजाइय ।
केहि कारण नर भिन्न-भिन्न, गुरु प्रसादकेँ पाबय ।।
पैसि गुफामे सब किछु देखय, बाहर किछु नहि सूझय ।
उलटे बाण पारिधिहि लागय, शूर-वीर से बूझय ।।
कहलापर गायक नहि गाबिथ, बौक सदा से गाबय ।
खेल मदारी देखथि प्रेक्षक, अनहद हेतु बढ़य ।।
कथनी-कहनी निजकेँ खोजय, ई सब अनकथ कथनी अछि ।
धरती उलटि अकासकेँ बेधय, लोकक ई बानी अछि ।।
बिनु प्याली अमृत छिलकय, नदी नीर भरि राखय ।
कहथि कबीर ओकरे चिर जीवन,
राम-सुधारस जे चाखय ।।

स्पष्टतः पहिल पाठमे ई पद एहन लगैत अछि, जेना अर्थहीन प्रलाप हो । परन्तु एहिठाम प्रत्येक शब्दक कोनो-ने-कोनो अर्थ होइत अछिः मनक उपमा माछ, जोलहा, शिकारी, हाथी, निरंजनसँ, मायाकेँ ठकनी. कुट्टनी स्त्री, बकरी, गाय बिलाइक रूपमे, संसारकेँ जंगल अथवा समुद्रसँ; इन्द्रियकेँ पाँच कुमारि अथवा मित्र आदि शब्दसँ

संकलित कएल जाइत अछि । एहन पदमे किछु सांख्य-वाचक अंक सेहो अबैत अछि; पाँच तत्व अथवा इन्द्रिय, तीन गुण अथवा लोक अथवा काल, आठ हठयोगीक शरीर-चक्र जे "एण्डोक्रीनिक ग्लैंड्स" सदृश्य ग्रंथिद्वारा हारमोन रस टपकबैत रहैत अछि । जेना एक दोहामे कबीर कहैत छथि जे "चौदह चन्द्रमा चौंसठि दीप जरौलनि । एहन कोन घर अछि जतए चन्द्रमा छथि, मुदा गोविन्द नहि ।" एहिठाम चौंसठि कलाक लेल आओर चौदह विद्याक लेल अछि ।

एहन विरोधाभास भरल उक्तिक परम्परा उपनिषदसँ चलैत आबि रहल अछि । "उर्ध्वमूल अधोशाखः वृक्ष" आओर दू पक्षी (दा सुपर्णा) क उद्धरण प्रसिद्ध अछि । तेत्तरीयोपनिषद्मे एकटा अंश अछि । जाहिमे कहल गेल अछि, "आकाश पृथ्वीमे आओर पृथ्वी आकाशमे रहैत अछि ।" ई परम्परा वज्रयानी बौद्ध सेहो आगाँ चलौलनि । संभवतः कबीर ई पद्धति हुनके सँ ग्रहण कएलनि ।

छंद

कबीरमे विभिन्न छंदक प्रयोग अथवा हुनक कौशल किंवा चमत्कार नहि देखि पड़ैछ । ओ सामान्य छंद जेना, दोहा अथवा साखी, सबद आओर रमैनीक प्रयोग करैत छथि । रमैनी चौबाइ अथवा चौपाई दोहा छल । ओ दू पंक्तिक छोट-छोट दोहा अछि अथवा लम्बा पद अछि । भए सकैत अछि, सम्मिलित गायन, कीर्त्तन, आओर भजनक कारणें एहि पद सभमे एतेक पुनरावृत्ति भेटैत अछि । एहि सभमे एहन कोनो छंद नहि अछि, जे पिंगल अथवा छंदशास्त्रक रूढ़िमे बन्हाएल हो । एहि छन्द सभक अपने नियम छैक आओर कबीर अपने अन्तर्लयक बंधक मौलिक रूपकेँ अनुसरण करैत बुझाइत छथि ।

श्री एम. ए. गनी "हिस्ट्री आफ द पर्सियन लैंग्वेज एट द मुलग कोर्ट" ग्रन्थमे कहने छथि जे "हमन है इश्क मस्ताना, हमन को होशियारी क्या" भरिसक उर्दूक पहिल गजल थिक । परन्तु एहि कथनक पुष्टि नहि भेटैत अछि । दखनीमे किछु आओर पुरान गजल भेटैत अछि । रामबाबू सक्सेनाक "ए हिस्ट्री आफ उर्दू लिटरेचर" मे "चन्दरभान बिरहमन" क उल्लेख भेटैत अछि । कबीर उर्दू फारसीक बरह (मात्रा) नहि अपनौने छलाह, तथापि भए सकैत अछि जे ओ सूफी काव्य-रचना सुनने होथि, भक्ति ओ प्रेम काव्य-गाथा सुनने होथि आओर ओही रचना सभक शैलीपर कबीरमे से संदर्भ भेटैत हो ।

कबीर कोनो सचेतन नागर कवि नहि छलाह । ओ अपन उल्लास आओर संत्रास तेहन भाषामे व्यक्त करैत छलाह, से हुनका सहज प्राप्त होइत गेलनि । ओ ने तँ कोनो तराशल (छीलल) शब्दक प्रतीक्षा करैत छलाह, आ ने हुनका रसज्ञ भावक थपड़ीक परबाहिए छलनि । तें हुनक रचनामे एकटा अनगढ़-पन आओर भदेसपन छनि

जे ओहिमे अपूर्व आकर्षणक निर्माण करैत अछि । हिनक छन्द-विधान अत्यन्त सरल अछि, तथापि मर्मस्पर्शी अछि आओर अपन अनुगूंज छोड़ि जाइत अछि । सम्पूर्ण दोहा अथवा पदक अन्तमे रचनाकारक नाम अबैत अछि । ई ओहि जमानाक एक प्रकारक "कापीराइट" छल । कारण ओहि जमानामे अनगिनत अनुकरण कएनिहार आओर भाव-शार्बिलक रहथि । मौलिकताक ठप्पा लागब आवश्यक छलैक आओर तें मध्य युगीन कवितामे एहने अंतिम पंक्ति भेटैत अछि, जेना "मीरा के गिरिधर नागर" अथवा "तुलसी कहत.....अथवा "सूर श्याम....."इत्यादि ।

यद्यपि परवर्त्ती हिन्दी कवि कतेको-सतसै (700 पद) जे आर्य सप्तशती अथवा "गाथा सप्तशती" ढंग पर छल, तथापि कबीर दोहा लिखलनि, तकर विशेष उल्लेख कएल जयबाक चाही । कबीरकेँ चमत्कारी अंक सै सँ कोनो सरोकार नहि छलनि ।

अन्य काव्यगुंण

मराठी कवि नामदेव, पंजाबी कवि नानक, तेलुगु कवि वेमना, कन्नड़ कवि बसवेश्वर आओर गुजराती कवि "आखो" कबीरक सदृश्य उदास मना मानवतावादी छलाह; जे जाति-पाँति, पंथ, सम्प्रदायक बंधनकेँ तोड़ि अपन रचना करैत छलाह । ओहि युगकेँ ध्यानमे राखि ई आओरो कठिन छल, कारण ओहि समयमे अंध-श्रद्धा आओर रुढ़िवादिता जन-मनकेँ जकड़ने छल । आब हिन्दी जगतमे कबीरकेँ प्रथम विद्रोही कवि और सर्वप्रथम आधुनिकतावादी कवि मानल जाइत अछि । (जून 1966क "पूरबी टाइम्स" कबीर विशेषांकमे यशपाल, संपूर्णानन्द, अमृतलाल नागर, अली सरदार जाफरी, फिराक गोरखपुरी, प्रकाश चन्द्र गुप्त, ई चेलीशेव आदिक लेख देखल जाए सकैछ) संगहि एक तरूण समालोचक ठाकुर प्रसाद सिंह तँ पूर्ण गंभीरतासँ कबीरकेँ आधुनिक हिन्दी "बीटनिक" कविताक पितामह कहलनि अछि ।

एहि सब लेखमे एक बात पर जोर छैक जे कबीर श्रोता अथवा पाठककेँ कोना झिकझोरैत छथि । कबीरकेँ पढ़लाक बाद क्यो पूर्ववत नहि रहि सकैत अछि । ओकरामे परिवर्त्तन अवश्य होएतैक । कबीर

ओकर मर्मकेँ स्पर्श कए लैत छथि । ओ अपन व्यक्तिगत अनुभवसँ रचना करैत छथि । एक गरीब जोलहा होएबाक कारणे सनातनी कट्टर हिन्दू अथवा मजहबी मुसलमान हुनका संग जेहन व्यवहार कएल; जे अन्याय हुनका सहए पड़ल, ओहि सभ अनुभवकेँ एक प्रगाढ़ विश्वात्मक मानवीय संदर्भसँ ओ जोड़ि दैत छथि । हुनक व्यक्तिगत प्रतिषेध लाखो मूक जनता-जनार्दनक प्रखर स्वर बनि जाइत अछि ।

फिराक गोरखपुरीक अनुसार पूर्वी उत्तर प्रदेशक गामक बोलीकेँ कबीर एक नवीन अर्थ प्रदान कएलनि । ओ ओहि बोलीमे मानू बिजली भरि जानदार बना देलनि । कबीर द्वारा कएल गेल एहि भाषा रूप-परिवर्त्तनक फिराक अनेक उदाहरण देलनि अछि । कबीर पढ़ल-लिखल नहि छलाह, तथापि ओ भारतीय-साहित्यक सबसँ महान रचनाकार सभमे एक छलाह । कबीर जीवनकेँ एक क्षणभंगुर अवस्था मानैत छलाह । टी.एस.इलियट जकाँ ओ कहैत छथि " एहि मुट्ठी भरि माटिमे अलक्षित भयानक "हारर" देखा देब ।" तहिना ओ अपन दोहामे एकरा "गुलाबमे लागल कीड़ा" व्यक्त करैत छथि-"एहि छन-पलमे की प्रलय भए जाएत, से हम नहि जनैत छी, आओर तैयो काल्हुक लेल मनसूबा एवं योजना बनबैत रहैत छी । मृत्यु तँ एना झपट्टा मारैत अछि जेना परबा पर बाज ।" "मालीकेँ अबैत देखि कलिका चीत्कार करैत अछि; भकरार फूल तँ तोड़ल गेल, काल्हि हमर पार होएत ।"

"माटि कुम्हारसँ कहैत अछि, तों हमरा किएक सानैत छह;
एक दिन हमहीं तोरा सनबह (समाहित करबह) ।"

"उमर खैयाम" क "कुजा नामा" मे एही आशयक एक रुबाई भेटैत अछि ।

गाँधीजी कबीरक निम्न पदकेँ अपन नित्य भजन पुस्तिकामे सम्मिलित कयलनि- (झीनी-झीनी बीनी चदरिया.....)

झीनी-झीनी बीनल चादरि ।

कथी केर तानी कथी केर भरनी, कोन तारसँ बीनल चादरि ।

इंगला-पिंगला ताना भरनी, सुखमय तारसँ बीनल चादरि ।
आठ कमल दल चरखा डोलय, पाँच तत्व गुणतीनू चादरि ।
प्रभुकेँ सीबामे मास दस लागत, ठोकि-ठोकि कए बीनल चादरि
से चादरि सुर-नर-मुनि ओढ़ल ओ मलिन कए देलनि चादरि
शब्दावली (पृष्ठ 74)

कपड़ा बीनब कबीरक जीविका छल । गाँधीजी सेहो कताइ बुनाइपर बहुत जोर देलनि । कतोक अंशमे भारतक एहि दू महान पुरूषमे बड़ समानता अछि; यद्यपि दूनू इतिहासक दू भिन्न-भिन्न युग आओर परिस्थितिमे कार्य करैत रहलाह अछि ।

कबीरक कवितामे एक दोसरो गुण अछि । ओ कहियो बसियाएत नहि । कबीर मनुष्यक मूलभूत कामनापर ठीक आंगुर रखलनि, ओ अछि, आन्तरिक शान्तिक खोज । एक एहन समाजमे जाहिसँ मनुष्य जुड़ि नहि पबैछ, ओकर संत्रास की थिक ? जतए विवेकक संकट छैक आओर नेतृत्व पंगु, ततए कबीरक कविता बहुत प्रेरणाक कार्य करैत अछि । ओ कतेको बेर समाजक पोंगापंथ-ढ़ोंग आओर द्विचित्तपनाकेँ उघार करैत छथि, कथनी-करनीक अन्तर बुझबैत छथि । तथाकथित पढ़ल-लिखल गण्यमान्यक आडम्बरक पोल खोललनि, आओर तथापि हुनकामे (कबीरमे) कतौ निराशाक स्वर नहि छनि । कबीरक काव्य-जगत "अश्रुक घाटी" नहि, ओ विरहक अन्तहीन कारी राति मात्र नहि; ई एहन कोनो खाधि नहि-जे कहिओ पार नहि कएल जाए सकय । हुनक स्वर एक ग्रामीण-सन ओजस्वी आओर विद्रोही अछि ओकरा सदा "पारकेर आशा" लागल रहैत छैक । हुनक आशाक स्रोत निस्संदेह आध्यात्मिक अछि, आओर ई तर्क देल जाए सकैत अछि जे आजुक "मूल्यहीनता" क युगमे ई सब अयथार्थ लगैत अछि । संगहिं कबीरक आस्तिकताकेँ स्वीकार नहि कएलो पर हुनक कवितामे बहुत किछु बचल रहैत अछि, जे मूल्यवान अछि । कबीरक आनन्द लेबाक लेल कबीरपंथी होएब आवश्यक नहि । हुनक काव्य-दृष्टि उच्चतर आओर महत्तर अछि । ओ एहि बातक परबाहि नहि करैत छलाह जे तेरहम अथवा चौदहम शतीमे हिन्दुस्तानक राजनैतिक व्यवस्था की छल । ओ अपन युगक

साहित्यिक क्रान्ति-कारिता अथवा परंपराक भूल-भुलैयाक सेहो परवाहि नहि कएलनि । ओ मात्र ओएह कएलनि, जकरा नीत्शे" "हँ-कथन" कहैत छथि । कोनो युगमे, एना करबाक लेल बड़ साहसक प्रयोजन अछि । कबीर मे सत्य कहबाक अपार धैर्य छल आओर ओकर परिणामकेँ सहबाक हिम्मत । कबीरक कविता, एही कारणसँ, एक अन्य प्रकारक कविता अछि । ओ कतेको रुढ़िक बन्धनकेँ तोड़ैत अछि । ओ एक मुक्त आत्माक कविता अछि ।

मूल पदक अनुवाद
अविनासी दुलहा कब मिलिहौं

अविनासी दुलहा कहिया भेटता, भक्तजनक रखबार ।।
जल उपजल जलहिंसँ नेहा, रटय पियास-पियास ।
हम विरहिनि ठाढ़क ठाढ़हिं, प्रियतम तोरे आस ।।
छोड़ल गेह, नेह लगाओल तोरेसँ, भेलहुँ चरणमे लीन ।
अन्तरमे आकुलता व्यापल, जेना पानि बिनु मीन ।।
दिन नहि भूख राति नहि निद्रा, आंगनने सोहाय ।
सेज भेल बैरी हमर, जगिते राति बिति जाय ।।
हम अहाँकेर दासी प्रभूजी, अहाँ हमर स्वामी छी ।
दीन-दयाल दया कए आबिय, अहाँ समर्थ स्रष्टा छी ।।
प्राण-त्याग करब हम प्रभुजी, अपन शरणमे लिय ।
दास कबीर विरह अति बाढ़य, दर्शन अपन दिय ।।

कबीर (हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृष्ठ 329)

तलफै बिन बालम मोर जिया ....

छटपट बिनु बालम जिया मोर ।।
दिन नहि चैन राति नहि निद्रा,
तड़पि तड़पि कएल भोर ।।
तन-मन मोर रहटे-सम डोलय,
सून सेजपर जनम बेकार ।।
नैन श्रान्त भए पंथ ने सूझय

निर्दयी प्रभु सुधि नहि लेल ।।
कहथि कबीर सुनू भाइ साधू,
दुख ग्रसित हम, दुख दूर करू ।।
कबीर (हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ, 329)

पिया मिलन की आस रहौ कबलौं खड़ी .....

पिया मिलन केर आस लए, कतेकाल रहु ठाढ़ि ।
ऊंच चढ़ल नहि जाय, मनमे लज्जा भरि-भरि ।।
पयर थिर नहि, चढ़िते खसि-खसि पड़ी ।
पुनि पुनि सम्हरि चढ़ी, चरण आगाँ धड़ी ।।
अंग-अंग मोर कापय, कतबिधि डरी ।
करम-कपट मग घेरि, तँ हम भ्रममे पड़ी ।।
निपट अनारि कुमारि, अछि पथ अति संकीर्ण ।
अटपट चालि अहाँक, मिलन कोना होएत ।।
छोड़ह कुमति-विकार सुमति गहि लिय ।
सतगुरू शब्द सम्हारि, चरण चित्त दिय ।।
अन्तरपट दिय खोलि, शब्द राखिय हियमे ।
हिय बिच दास कबीर, बौराहा अहाँकेँ मिलय ।।

अपनपौ आप ही बिसरो

सब अपनाकेँ बिसरि गेल ।
जेना कुकुरबा काच मंदिरमे, निज बिम्ब देखि भुकैछ ।
जेना सिंह निज बिम्ब देखि, अंध-कूप कूदि गेल ।
ओहिना गज फटिक-शिलापर, दंत अपन रगरैछ ।
मधुर हाथमे राखि बनरबा, मुदित द्वारि-द्वारि भटकैछ ।
कहथि कबीर तोँ बनकेर सुग्गा, पकड़ि, पिंजर-बंद केलकौ ?
कबीर (हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृष्ठ 344)

ऐसो भरम बिगूचन भारी

एहन भरम बिगूचन भारी ।
वेद, कुरान, स्वर्ग-नरक, के छथि पुरुष, के छथि नारि ।

एक बून्द एके अछि मूत्र, एक चाम एक अछि गुद्दा ।
एके ज्योतिसँ जन्म सभक अछि, केव्रह्मण, के सूद्र ।
माटिक बनल घट फुटलापर, नाम ओकर की देवै ।
रजगुण ब्रह्मा तमगुण शंकर, प्रभु सतगुण-धाम ।
कहथि कबीर राम सभक हिय कि हिन्दू कि तुर्क ।
कबीर ग्रंथावली (सम्पा. श्याम सुन्दर दास, पृष्ठ 106)

तोको पीव मिलेंगे, घुंघट के पट खोल री .....
अहाँकेँ प्रियतम भेटताह, मात्र घोघ उठाए लिय ।
घट-घट प्रभु बिराजथि, कटु वचन किए भाखिय ।
धन, सुषमाकेर गर्व करू नहि, पंचतत्वक चोल थिकं फूसि ।
सुन्न महलमे दीया बारू, आस तजू नहि कनियों ।
जोग-युक्तिसँ रंग महलमे, प्रिय पाएब अनमोल ।
कहथि कबीर, भेल मुदितमन, बाजए अनहद मृदंग ।
कबीर (हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृष्ठ 350)

रहना नहि देस बिराना है.....
घर नहि, देश ई अनजान अछि ।
ई संसार कागजकेर पुरिया, बूंद पड़ैत गलि जाएत ।
ई संसार कांटकेर बाड़ी, ओझरा-पोझरा (लोक) मरि जाएत ।
कहथि कबीर, सुनु साधुजन, सतगुरू नाम मात्र लक्ष्य अछि ।
कबीर (हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृष्ठ 308)

बुढ़िया हासि बोली.....
बुढ़िया हंसिकए बाजल, हम चिर-यौवना छी ।
हमरासँ बढ़ि के अछि युवती, कोन नारि रस-पूरित ।
दंतगलित भेल पान चिबौने, केश झरल गंगा नहयने ।
माला गंथिते नयन-ज्योति गेल, पर-पुरुष-स्वीकारमे गेल वयस ।
जानु पुरुष अछि हमर अहार, अनचिन्हार लेल करी श्रृंगार ।
कहथि कबीर, बुढ़िया मुदित भए गाबय,
धीया-पूता, पतिकें खाय ।
कबीर बीजक (सम्पा. डॉ. वासुदेव सिंह पृ. 184)

माया महा ठगिनी हम जानी.....
माया महा ठकनी अछि ।
तिनगुण फाँस कर लए घूमय, वाजय मधुरिम बोल ।
केशवहेतु कमला बनि बैसलि, शिवक लेल भवानी ।
पडा लेल मूर्ति भए बैसलि, तीर्थमे बनली पानि ।
जोगी लेल जोगिनी भए बैसलि, राजाकेर घर रानी ।
ककरो लेल हीरा भए बैसलि, ककरो लेल कनही कौड़ी ।
भक्तक लेल भक्तिन भए बैसलि, ब्रह्मा लेल ब्रह्माणी ।
कहथि कबीर सुनू भाइ साधू, ई सब अनकहल कथनी ।
(शबद, कबीर साहेबक बीजक बेलवेडियर प्रेस, पृष्ठ 52-53)

लाओ बाबा आगि जलाओ घरा रे....

लाबह बाबा आगि, जराबह एहि घरकेँ,
तेहि कारण मन बनिज समाहित ।
एक डाइन मोर मन बिच बैसल,
नित उठि मोर मनकेँ अछि डंसइत ।
एहि डाइनकेँ बालक पाँच
निसदिन हमरा नचाबय नांच ।
कहथि कबीर, तकरे हम दास
डाइनकेर संग रही उदास ।
कबीर (हजारी प्रसाद दिवेदी, पृष्ठ 311)

अरे इन दोउन राह ना पाई....

आह ! ई दूनू पथ भटकि गेल ।
हिन्दू करथि अपन बड़ाई, घैला छूबए नहि देथि ।
वेश्याक चरण तर सूतथि, ई हिन्दुत्व हुनक देखू ।
मुसलमानक पीर-औलिया मुर्गा-मुर्गी खाथि ।
हिन्दुकेर हिंदुत्व देखल हम, तुर्ककेर तुर्कत्व ।
कहथि कबीर सुनू साधुजन, कोन पथ करी बरण ।

ना जाने साहेब कैसा है.....

नहि जनै छी साहेब (प्रभु) की चाहै, छथि ।
मुल्ला भए बांग जे दै छथि
की प्रभु अहांक बहीर ?
कीड़ा पग नेउर बाजय
सेहो प्रभु की सुनै छथि ।
तिलक लगाए जपी लए माल
पैघ जटा बढ़ाबैं छथि ।
तोहर हृदयमे भ्रमक कटारी
एना प्रभु नहि भेटै छथि ।
कबीर (टैगोर, पृष्ठ 70-71)

पंडित बाद बंदते झूठा.....

पंडित फुसिये गप्प-हँकै छथि ।
राम कहैत जग त्राण पाबए जँ
गुड़ खाए मुँह मीठ ।
आगि कहलासँ आगि जरए जँ
जल सँ प्यास मेटाय ।
जाधरि सुग्गा हृदय बीच अछि
हरिक नाम रटय ।
जँ कहियो उड़ि जाए जंगलमे
बिसरियो नहि भाखय ।
यथार्थ प्रेम विषय माया संग
हरि-भक्तिमे समरपू ।
कहथि कबीर प्रीति उपजल नहि
तँ बन्हि कए जाएब नर्क ।
—कबीर ग्रंथावली (सम्पा. माता प्रसाद गुप्त, पृष्ठ 170)

ना मैं धरमी नाहि अधरमी .....

नहि हम धरमी, नहि छी अधरमी
नहि यती नहि कामी छी ।
नहि देखैत छी, नहि सुनैत छी
नहि स्वामी, नहि सेवक छी ।।
नहि छी बान्हल, नहि हम मुक्त,
नहि विरक्त, नहि छी अनुरक्त ।
नहि ककरो हम संगी छी,
नहि छी ककरोसँ असंपृक्त ।।
नहि हम नरक-लोक मे जाएब,
नहि हम स्वर्ग सिधारब ।
सबटा कर्म क्यो भरिसक बुझय,
हम दृढ़ भए ई पाओल अछि ।
कबीर कोनो मत नहि थोपथि,
नहि मेटबै छथि ।।

कबीर (टैगोर, पृष्ठ 85)

संतन जात ना पूछो निरगुनिया——

संतक जाति नहि पुछिय, ओ छथि जातिसँ उपर ।
साधु ब्राह्मण, साधु क्षत्रिय, साधु-संत छथि बनियां ।
छत्तीसो जातिमे साधु जाति, तोहर पुछब अति तीक्ष्ण ।
साधू नापित, साधू धोबी, साधू जातिक बरही ।
संत रैदास मोची जातिक, स्वपच ऋषि भंगी ।
हिन्दु-मुस्लिम संत बनल छथि, अन्तर कहां-कतौ अछि ?

कबीर (टैगोर पृष्ठ 1)
कबीर (संपा. हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ. 233)

तेरा मेरा मनुआ कैसे इक होइ रे

तोहर हमर मन कोना एक होएत ?
आँखिक देखल हम कहइत छी

तों कागज पढ़ला कहैत छह ।
हम समाधान दैत छी
तों तकरा भरमाय दैत छह ।।
हम कहैत छिय जागल रहिह
तो सूतल रहइत छह ।
हम कहैत छिय निर्लोभ रहह,
तों सदा लोभी छह ।।
बुझबैमे कत युग बीतल
क्यो नहि किछु मानैए ।
तो तँ रंडी बनल, नष्ट भेल
सब धन स्वाहा करै छह ।।
सतगुरू धारा निर्मल बहइछ,
मज्जन करह निज कायाकें ।
कहथि कबीर सुनह साधुजन,
तखने चिरवांछित पएबह ।।

कबीर (हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ, 324)

मोको कहाँ ढूंढ़े बंदे....

हमरा कतए खोजै छह संगी, हम छी तोहरे लगमे ।
नहि हम छागर, नहि छी भेड़ी, नहि हम छुरी गंड़ासमे ।
नहि चमड़ीमे, नहि नाङरिमे, नहि हड्डी नहि मासुमे ।
नहि देवालय, नहि मस्जिदमे, नहि काबा कैलाशमे ।
नहि हम कोनो क्रिया-कर्ममे, नहि योग बैरागमे ।
खोजी कैँ तुरन्त हम भेटी, पलभरियेक खोज मे ।
कहथि कबीर सुनू साधू, हुनक स्वास हमर साँसमे ।

कबीर (सम्पा. हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ. 230)

कबीरक दोहा

भारी कहबामे डर होइछ, हल्लुक कही तँ झूठ ।
हम की जानब रामकें, आँखि नें देखल कहियो ।।

ओ कहैत छथि, अति विलक्षण, अद्‌भुतकेँ नुका लै छथि ।
वेद कुरान सेहो की जानय, ई कथनी के पतिआयत ।।
कत्तकिर गति अगम अछि, करह प्रयाण निज गतिसँ ।
धीरे-धीरे पयर बढ़ाबह, लक्ष्य अपन निश्चय पयवह ।।
नयन कोठली परिणत भेल, पुतली पलंग बिछाय ।
पलकक चिक तानि कए पियकेँ लेलहुँ रिझाय ।।
प्रियतमकेँ पठायब पाँती लिखि, जँ ओ हेताह विदेश ।
तनमे मनमे नैनमे, छथि बसल, भेजब की संदेश ।।
पर्वत-पर्वत तनिका खोजल, नयन गमाओल कनिते ।
से बूटी नहि पाओल, पुनर्जीवन होय जकरासँ ।।
नयन हमर गलि गेल, पल-छन तोहर समरनमे ।
पाओल नहि तोरा, नहि भेलहुँ प्रसन्न, एहन बेदनामनमे ।।
सब सुखी अछि जगती पर, खाय-पीअय आ सूतय ।
दुखिया दास कबीर छथि जे जागय आ कानय ।।

किछु हिन्दी-अंग्रेजी पुस्तक

[हिन्दी पुस्तकक ई सूची श्री कृष्णाचार्य, नेशनल लाइब्रेरी, वेल-वेडियर, कलकत्ता द्वारा तैयार कएल गेल, तथा एहिमे ओ सभ पुस्तक सम्मिलित कएल गेल अछि, जकरा माता प्रसाद गुप्त "हिन्दी पुस्तक साहित्य" (1942) में संकलित कएने छलाह ।]

कबीर विषयक पुस्तक

अग्रवाल, तारक नाथ

कबीर परिचय, बंगीय हिन्दी परिषद, कलकत्ता 1951

भटनागर, रामरतन

कबीर साहित्य की भूमिका,' रामनारायण लाल, इलाहाबाद, 1950

कबीर-दोसर संस्करण, किताब महल, इलाहाबाद 1958

चतुर्वेदी, परशुराम

कबीर साहित्य की परख, भारती भण्डार, इलाहाबाद 1954

बाली, तारकनाथ

युगद्रष्टा कबीर, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1957

भारत भूषण, सरोज

महात्मा कबीर, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली 1958

द्विवेदी, हजारी प्रसाद

कबीर, द्वितीय परिवर्धित संस्करण, हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर, बम्बई 1947

द्विवेदी, केदारनाथ

कबीर और कबीरपंथ; तुलनात्मक अध्ययन, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद, 1965

गौड़, राजेन्द्र सिंह

संत कबीर दर्शन, साहित्य भवन, इलाहाबाद, 1955

गुप्त, शिवचरण
कबीर साहित्य समीक्षा, नवयुग पुस्तक भण्डार, लखनउ 1965
के, एफ. ई.
कबीर एण्ड हिज फॉलोअर्स, आक्सफोर्ड युनिवर्सीटी प्रेस, कलकत्ता, 1931
(ई शोध-ग्रंथ लंदन युनिवर्सीटी द्वारा स्वीकृत)
मैनी, धर्मपाल
कबीर के धार्मिक विश्वास, भारतेन्दु भवन, चण्डीगढ़
शर्मा, सरनाम सिंह
कबीर : एक विवेचन, हिन्दी साहित्य भण्डार, दिल्ली 1960
कबीर-विमर्श, भारत भारती (प्रा. लि.) दिल्ली, 1962
श्रीवास्तव, पुरूषोत्तमलाल
कबीर साहित्य का अध्ययन, साहित्य-रत्नमाला कार्यालय, बनारस, 1951
तिवारी, भोलानाथ
कबीर और उनका काव्य, राजमहल, दिल्ली, 1962
त्रिगुणायत, गोविन्द
कबीर की विचारधारा (पी. एच. डी. के लिये स्वीकृत शोध ग्रंथ)
दूसरा संस्करण, साहित्य निकेतन, कानपुर 1957
वर्मा, रामकुमार
कबीरका रहस्यवाद, पाँचवां संस्करण, साहित्य भवन, इलाहाबाद, 1944
विजयेन्द्र, स्नातक (सम्पादित)
कबीर, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1956

कबीरक रचना

अखरावली	बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, 1913
अनुराग सागर	गुलशन-ए-पंजाब प्रेस, रावलपिंडी, 1902
अनुराग सागर	विश्वेश्वर प्रेस, बनारस, 1929
आत्म-बोध	सुखराम दास मधीर सिंह, हैदराबाद, 1901
भणित प्रकाश	(स) परमानन्द साधू, कोहेनूर प्रेस, लाहौर, 1983
बीजक वाणी	बहरामजी फिरोजशाह मदान, बम्बई, 1906
बोध सागर	(स) युगलानंद भाग 1-6 बेंकटेश्वर प्रेस बंबई, 1906
एकोत्तरशतक :	बैंकटेश्वर प्रेस, बम्बई, 1920
हंसमुक्ता शब्दावली :	रामलाल दयालदास, सूरत, 1893
ज्ञान समाज	गुलजार-ए-हिन्द प्रेस, गुरगांव, 1969
काफिर-बोध	भगवानदास रामजी, थेवला, 1892
कबीर दर्पण	सेतवली मोहम्द पीर मोहम्मद, बंबई 1898
कबीर सागर	(स) युगलानन्द, बेंकटेश्वर प्रेस, बंबई 1806
रमैनी	लाइट प्रेस, बनारस, 1968
शब्दावली	गणपति दास लक्ष्मण दास, टेपारी (म. प्र.)
शब्दावली	बेलवेडिर प्रेस, इलाहाबाद, 1922
शतक टीका	अखेराय, कबीरचौरा, बनारस, 1922
उपदेश रत्नावली	भारत बंधु प्रेस, अलीगढ़, 1862
बीजक भाष्य	सदाफलदेवक टीका, मुक्ति पुस्तकालय,

बलिया 1915

बीजक कबीरदास — विश्वनाथ सिंहक टीका, मोहनलाल भार्गव लखनऊ, 1915

बीजक मूल — भार्गव पुस्तकालय, बनारस

कबीर — वियोगी हरि, सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली 1959

कबीर बीजक (मूल) : — पुस्तक मंदिर, मथुरा

कबीर दोहावली — (सं.) महेन्द्र कुमार जैन, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, इलाहाबाद, 1952

कबीर ग्रंथवाली — (सम्पादित, भूमिकासहित) श्याम सुन्दर दास पंचम संस्करण, काशी नागरी प्रचारिणी सभा, 1951

कबीर ग्रंथावली — पुष्पमाल सिंह, अशोक प्रकाशन, दिल्ली 1962

कबीर साहवका-बीजक ग्रंथ — मणिराम साहब (सं.), मोतीदास-निन्तादास संस्वावेद कार्यलय, बड़ौदा, 1955

कबीर साखी संग्रह : — सम्पा. सीताराम चतुर्वेदी, पंचम सं. हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद, 1964

कबीर वचनामृत — (सम्पा) मुंशीराम शर्मा द्वितीय संस्करण, आचार्य शुक्ल साधना सदन, कानपुर, 1955

मूल बीजक — टीका, पूरण साहव तथा काशी दास द्वारा प्रशोधित लक्ष्मी बेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई, 1936

सनवी ग्रंत — टीका, महाराज राघवदास, द्वितीय संस्करण, बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर्स, बनारस, 1950

संस्कृत बीजक ग्रंथ : (अनु.) हनुमान दास, (सं.) मोतीदास-चेतनदास, द्वितीय संस्करण, स्वसंवेद कार्यालय बड़ौदा, 1950

संत कबीर साहित्य भवन, इलाहाबाद, 1943

संत कबीर की-शब्दावली (संकलन) मणिलाल तुलसीदास मेहता विट्ठलदास खेमचन्ददास, अहमदाबाद, 1958

कबीर का रहस्यवाद : डॉ रामकुमार वर्मा, साहित्य भवन, चतुर्थ संस्करण, इलाहाबाद, 1941

कबीर-साखी सार : (सम्पा) तारक नाथ बाली, टीकाराम वसिष्ट, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 1936

कबीर के शब्द पुस्तक मन्दिर, मथुरा

कबीर वचनावली (संपा) अयोध्या सिंह उपाध्याय "हरिऔध", द्वितीय संस्करण, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, 1920

कबीर ग्रंथावली पारस नाथ तिवारी (1957 में स्वीकृत शोध प्रबन्ध), इलाहाबाद विश्वविद्यालय प्रकाशन, 1961

अंग्रेजी

वेस्टकाट, जी, एच.
कबीर एण्ड कबीर पंथ 1907, सुशील गुप्ता लिमिटेड, 1965

टैगोर, रवीन्द्र नाथ
वन हण्ड्रेड पोएम्स आफ कबीर, मैकमिलन एण्ड कं., प्रथम सं. 1915

117157
10·12·04

कबीर, जे पन्द्रहम शतीमे विद्यमान छलाह, संभवतः प्रारंभिक हिन्दी साहित्यक महानतम गीति कवि आओर रहस्यवादी छलाह। हुनक रचना आओर दर्शन आबएवला शताब्दिएमे नहि मात्र हिन्दी साहित्य पर अपितु उत्तर भारतक जन सामान्य पर अमिट प्रभाव छोड़लक। हिन्दू एवं इस्लाम—दूनू धर्मक अर्थहीन रूढ़ि आओर आचार पर प्रहार कए ओ दूनूकेँ निकट अनबाक प्रयत्न ई कहैत कएलनि जे दूनूक अन्तिम लक्ष्य एक आओर एक समान अछि।

एहि पुस्तिकामे प्रभाकर माचवे प्रारंभमे कबीरक जीवनक आधारभूत एवं अद्यतन ज्ञात सामग्री सभक समीक्षात्मक लेखा-जोखा आओर पुनः दार्शनिक रहस्यवादक हुनक अवदानक आकलन प्रस्तुत कएलनि अछि। एकर उपरान्त ओ कबीरक रचना सभ तथा हिन्दी भाषा आओर साहित्यक विकासमे हुनक स्थानक सम्यक् मूल्यांकन सेहो कएल अछि।

Library IIAS, Shimla
HT 811.21 K 112 M
00117157

आवरण : सत्यजित रे
सन्निवेश : श्यामल सेन

SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15.00